चन्दामामा
माँ - बच्चों का मासिक पत्र
OCT. '50
6
as

Photo by A. L. Syed

दर्पण से चुम्बन

ग्राहकों को एक सूचना

चन्दामामा हर महीने पहली तारीख के पहले ही डाक में भेज दिया जाता है। इसलिए जिनको चन्दामामा न पहुँचा हो वे तुरंत डाक घर में पूछताछ करें और फिर हमें सूचित करें। १०-वीं तारीख के बाद हमें पहुँचने वाली शिकायतों पर कोई ध्यान न दिया जाएगा। कुछ लोग तीन-तीन महीने बाद हमें लिखते हैं। पत्र-व्यवहार में ग्राहक-संख्या का अवश्य उल्लेख करें।

व्यवस्थापक : 'चन्दामामा' :: पो. बा. नं. १६८६ :: मद्रास-१

पंडित डी. गोपालाचार्लु की
अरुणा
स्वर्णजयंती
1898 - 1948
Aruna
आयुर्वेद के पुनरोद्धारक
गर्भाशय के
रोग दूर करनेवाली
आयुर्वेदाश्रमम् लिमिटेड, मद्रास 17.

चन्दामामा

माँ - बच्चों का मासिक पत्र
संचालक : चक्रपाणी

वृन्दावन में गोकुल के लोग सुख से रहने लगे। लेकिन ज्यादा दिन तक नहीं। स्थान बदलने पर भी कंस से उन लोगों का पिण्ड नहीं छूटा। एक दिन की बात है—कृष्ण, बलराम और अन्य गोप-बालक जङ्गल में गौएँ चरा रहे थे। गर्मी के दिन थे। धूप बड़ी तेज थी। थोड़ी ही देर में सबको प्यास लगने लगी। वहाँ से नजदीक ही एक बड़ा तालाब था। इसलिए प्यास बुझाने के लिए वे गौएँ हाँक कर उस तालाब के किनारे गए। उसी तालाब में कंस का भेजा हुआ बकासुर नाम का एक राक्षस बगुले के रूप में इनके लिए ताक लगाए बैठा था। बस, इनको देखते ही वह अपनी लम्बी चोंच फैला कर दौड़ा और झपट कर कृष्ण को निगल गया। बलराम और अन्य गोप-बालक यह दृश्य देख कर मूर्छित हो गए। लेकिन कृष्ण ने बगुले के पेट में जाते ही अपने तेज से उसे जलाना शुरू कर दिया। बगुला उस गरमी को न सह सका और उसने कन्हैया को उगल दिया। फिर उसने चोंच से मारना चाहा। लेकिन उसके पहले ही कन्हैया ने दोनों हाथों से उसकी चोंच पकड़ ली और उसे बीच से चीर डाला। बकासुर तुरन्त मर गया। इस तरह कृष्ण के हाथों और एक राक्षस को मुक्ति मिली।

अङ्क 2—वर्ष 2
अक्तूबर 1950

एक प्रति 0-6-0
वार्षिक 4-8-0

माँ का लाल

टहलने गया इक दिन कैज़र
जर्मनी देश का बादशाह।
उसको इक बालक दीख पड़ा
चुपचाप खड़ा ज्यों भूल राह।

कैज़र ने पूछा—'ऐ बच्चे!
इस तरह कहो क्यों खड़े यहाँ?'
'मैं ढूँढ़ रहा हूँ डाक्टर को;'
लड़के ने उससे तुरत कहा।

'तुमको डाक्टर से कौन काम?'
तब कैज़र ने उससे पूछा।
'बीमार पड़ी मेरी माता'
बोला लड़का कर सिर नीचा।

'तो चलो चलें, देखें उसको'
कह साथ चले तब महाराज।
लड़का बोला—'लेकिन गरीब
हैं हम, दे सकते नहीं फीज़।'

'इसकी चिन्ता न करो!' कह कर
कैज़र बालक के साथ गया।
उसके घर की दुर्दशा देख
कर तुरत आ गई उसे दया।

'बैरागी'

लड़के के हाथ दिया उसने
तब लिख कर कुछ इक पुरजे पर।
फिर चला गया उस लड़के को
धीरज देकर, सिर सहला कर।

पुरजे को समझ दवा का वह
इक दुकान पर ले गया उसे।
राजा के हस्ताक्षर तिस पर,
फिर कहो अचम्भा हो न किसे?

हो गया चकित दूकान-दार
राजा की हुण्डी देख बहुत।
तब उसे भुना कर दिला दिया
लड़के को रुपया सभी तुरत।

रुपए की महिमा! मिली दवा,
झट डाक्टर भी दौड़े आए।
अम्मा भी चंगी हुई और
भागीं लड़के की चिन्ताएँ।

बच्चो! देखा तुम ने; कैसा
है मातृ-भक्ति का पुरस्कार?
माँ का जो सच्चा लाल उसे
जग में करते हैं सभी प्यार।

चन्दामामा

[रामेश्वर दयाल दुबे एम. ए. साहित्यरत्न]

शीतल सपनों का यह राजा,
चन्दा मामा आता है।
चाँदी की किरणें छिटका कर
मधुर मधुर मुसकाता है।
वह देखो पेड़ों से झाँका,
कैसा सुन्दर, कैसा बाँका?
वह लो, और उठा कुछ ऊपर,
बिखरी धवल चाँदनी भू पर।
मीठा दूध भरा है इसमें,
यह चाँदी का बड़ा कटोरा।
पाने को मचला करते हैं
जग के छोटे छोरी-छोरा।
अरे नहीं, यह और कुछ नहीं,
यह चाँदी की थाली है।
तैर रही जो नभ सागर पर
लेकर नव उजियाली है।

लेकिन बात बताओ भैया!

माँ का भाई मामा होता,
यह माँ का है भाई कैसे?
नभ में सदा घूमने वाला
हुआ सभी का मामा कैसे?

सुनो, सुनो, मैं तुम्हें बताऊँ-

मथा गया था जब समुद्र तब
लक्ष्मी निकली, चन्दा निकला।
भगिनी लक्ष्मी, भाई चन्दा
इस रिश्ते से मामा निकला।

अच्छा, अब बतलाओ तुम!

सुन्दर उजले चन्दा में है
यह धब्बा क्या काला-काला?
मैला दाग कि गड्ढा इसमें,
अथवा है यह इसका छाला?

मैं बतलाऊँ, मैं बतलाऊँ?

पुपले-पुपले ओठ हिला कर
मेरी नानी कहती है—
बैठी बैठी बुढ़िया इसमें
चरखा काता करती है।

नहीं, नहीं, लो मैं बतलाऊँ—

बाबा कहते—काले काले
खड़े हिरन हैं इसमें भाई!
नारद की वीणा सुनने को
रहती भीड़ सदा ही छाई।

उहूँ, उहूँ, लो मैं बतलाऊँ—

मेरी बुआ कहा करती हैं
यह तो है लगा डिठौना।
जिससे चन्दा पर न चल सके
कोई जादू या टोना।

गलत, गलत, लो मैं बतलाऊँ—

इस सफेद चन्दा पर लिखने
लेख चला इक भाई!
धक्का लगा, दवात गिर गई
चन्दा पर फैली स्याही।
लेकर रबर मिटाई कालिख
पर न मिट सका पूरा दाग।
तब से ही मैला का मैला
रहा चन्द्रमा का वह भाग!
खूब, खूब, क्या बात कही है,
चन्दा हमें सुहाता है।
शीतल सपनों का यह राजा,
चन्दा मामा आता है।

घोड़ा मंदिर पर न चढ़े

तेलुगू भाषा में एक कहावत है जिसका माने होता है—'कहीं घोड़ा मंदिर पर न चढ़े!' जब कोई हठी आदमी कोई काम करना चाहता है और बड़ों के समझाने पर भी नहीं मानता तो लोग यह कहावत कहते हैं। इस कहावत के बारे में एक कहानी है; लो सुनो—

जब फिरंगी लोग पहले-पहल हमारे देश आए तो देहात के लोग उन्हें अपने गाँव में क़दम नहीं रखने देते थे। उनका विश्वास था कि इनका आना अशुभ है। खास कर ब्राह्मण लोग जो छूत का बहुत ख्याल करते थे उनका आना बिलकुल पसंद नहीं करते थे। वे सोचते थे कि ये समुंदर पार से आए हुए लोग हैं और इनके आने से उनका गाँव अपवित्र हो जाएगा। क्योंकि शास्त्रों में लिखा हुआ है कि समुद्र-यात्रा करना पाप है। इसीलिए कट्टर सनातनी लोग विलायत हो आने वाले लोगों को या तो बिरादरी से निकाल देते थे या उनसे प्रायश्चित्त कराते थे। आज भी यह प्रथा कहीं कहीं जारी है।

कंपनी के राज के उन दिनों में बड़े साहब और छोटे साहब सभी रहते तो शहर में थे; लेकिन सरकारी काम पर कभी कभी उन्हें गाँवों में मुकाम करना पड़ता था। इस तरह मुकाम पर आए हुए साहबों से गाँवों के लोग बहुत डरते थे। मन में उन्हें उनका गाँव में आना पसंद न था। लेकिन वे उन्हें खुले तौर पर रोक भी न सकते थे। क्योंकि नाखुश होने पर उन्हें साहब लोग किसी न किसी जाली मुकदमे में फँसा कर चौपट कर सकते थे। सरकारी अफसरों से झगड़ा मोल लेना क्या था, पानी में रह कर मगर से बैर करना था। गोदावरी जिले में पेरूर नाम का एक गाँव

शांता देवी

था। यहाँ के रहने वाले ब्राह्मण लोग सरकारी अफसरों से बिलकुल नहीं डरते थे। अब तुम पूछोगे कि जब सब लोग साहबों से डरते थे तो ये क्यों नहीं डरते थे? इसका एक कारण था। उस गाँव के रहने वाले बहुत मिल-जुल कर रहते थे। अगर गाँव में कोई झगड़ा-बखेड़ा उठ खड़ा होता तो ये आपस में ही तय कर लेते। कभी अदालत या पुलिस वालों के पास फटकते भी न थे।
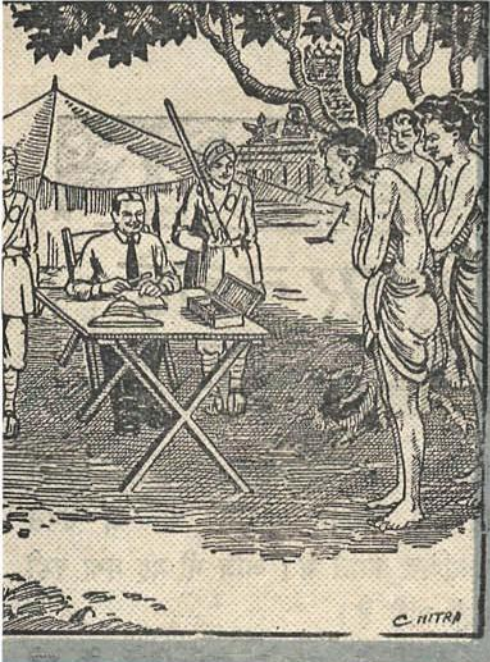
एक बार उस गाँव में कोई वारदात हो गई। यह बात जब बड़े साहब को मालूम हो गई तो उन्होंने सोचा—' अच्छा मौका है!' जाँच-पड़ताल करने के लिए वे तुरन्त एक घोड़े पर सवार होकर चपरासियों के साथ उस गाँव की ओर चले। जब गाँव वालों को मालूम हुआ कि साहब उनके गाँव आ रहे हैं तो उन्होंने एक जगह जमा होकर सलाह-मशविरा किया। फिर कुछ बड़े-बूढ़ों ने गाँव के बाहर ही साहब के पास जाकर हाथ जोड़ कर विनय की—' हुजूर! हमारे गाँव का रिवाज है कि हम परदेसियों को अपने गाँव के अन्दर मुकाम नहीं करने देते। आशा है कि आप भी हमारे गाँव के रीति-रिवाजों का ख्याल करेंगे।'

-लेकिन साहब ने उन की विनय पर कोई ध्यान न दिया। वे सिर्फ़ मुसकुरा कर रह गए। शायद उन्होंने सोचा कि इन अपढ़ गँवारों का मैं क्यों लिहाज करूँ? वे बड़े साहब थे न? उन्हें गाँव वालों की बात मानने की क्या जरूरत थी? गाँव वाले नाखुश हो जाते तो भी उनका क्या बिगाड़ सकते थे? थोड़ी ही देर में उन्होंने गाँव में क़दम रखा और मंदिर की बगल में ही डेरा डाल कर जाँच-पड़ताल करना शुरू कर दिया।

इस तरह दो दिन बीत गए। साहब को किसी चीज़ की कमी न थी।

चपरासी लोग खाने-पीने की चीज़ें मुफ्त में जुटाया करते। साहब मौज़ से खाते-पीते। उन्हें कोई जल्दी न थी। समय अच्छी तरह कट रहा था। साहब का घोड़ा मंदिर के पिछवाड़े में बँधा रहता था। तीसरे दिन गाँव वालों ने सोचा कि साहब को एक सबक सिखाना चाहिए। उन्होंने आपस में सलाह करके एक अच्छा उपाय सोच निकाला। वे आधी रात को जब सब लोग सो रहे थे, उठे और कमर कस कर अपनी अपनी पीठ पर एक एक पुआल का गट्ठर ढो लाए। उन्होंने उन गट्ठरों को एक एक करके सीढ़ियों की तरह इस तरह डाल दिया जिससे वे मंदिर के शिखर जितने ऊँचे हो जाएँ। फिर उन्होंने उन गट्ठरों पर आखिर तक हरी हरी घास बिछा दी। फिर उन्होंने घोड़े को लाकर उस जगह खोल दिया। घोड़ा हरी घास चरते हुए धीरे-धीरे गट्ठरों पर चढ़ता मंदिर पर चढ़ गया। तब लोग अपना अपना गट्ठर उठा कर चुपके से घर चले गए। इस तरह घोड़ा मंदिर पर कैद हो गया। सबेरा होते ही सारे गाँव में शोर मच गया कि साहब का घोड़ा गायब हो गया है। साहब ने भी चपरासियों को उनकी लापरवाही

के लिए खूब फटकारा। चपरासी घबड़ा कर तुरंत सारे गाँव में तलाश कर आए। लेकिन घोड़ा उन्हें कहीं न दिखाई दिया। आखिर जब कुछ न सूझा तो साहब खुद उसे तलाश करने निकले। इस तरह घूमते घूमते वे मंदिर के सामने गए तो मालिक को देखते ही घोड़ा हिनहिना उठा। घोड़े को मंदिर के शिखर पर देखते ही साहब के अचरज का ठिकाना न रहा। थोड़ी देर में देखा-देखी गाँव वाले सभी वहाँ जमा हो गए। जिन जिन को इसका रहस्य नहीं मालूम था वे सब हैरान हो गए कि घोड़ा मंदिर पर कैसे चढ़ गया? चारों ओर लोगों में काना-फूसी होने लगी। इतने

में एक बूढ़े ने उस भीड़ में से राह बना कर आगे आकर कहा—'हुजूर! हमने आपसे पहले ही कह दिया था कि आप गाँव के रीति रिवाजों का ख्याल रखें। लेकिन आपने हमारी बातों पर कोई ध्यान न दिया। देखिए, नतीजा क्या हुआ? तिस पर आपने डेरा डाला मंदिर की बगल में! भला ऐसी गुस्ताखी हमारे देवता कैसे माफ़ करते? उन्हें क्रोध आ गया और उन्होंने आपके घोड़े को मंदिर पर फेंक दिया। बोलिए, हुजूर! क्या किया जाय? हाँ, अब भी अगर आप अपनी गलती महसूस करें तो शायद हमारे देवता को दया आ जाए और वे आपके घोड़े को सबेरा होते होते हिफ़ाजत से नीचे उतार दें।'

साहब गुम-सुम खड़े थे। उनकी अक्ल हैरान थी। घोड़ा आख़िर मंदिर पर कैसे चढ़ गया? कहीं उसके पङ्ख तो नहीं उग आए? बहुत सोचने पर भी उन्हें कोई रास्ता न सूझा। आख़िर उन्हें धीरे धीरे उस देवता की महिमा पर विश्वास हो गया। साहब को बूढ़े की बात जँच गई। उन्होंने हाथ जोड़ कर देवता को प्रणाम कर लिया। तब उस बूढ़े ने कहा—'अब आप निश्चिंत हो जाइए। सबेरा होते होते आपका घोड़ा नीचे उतर आएगा।' फिर उस रात को गाँव वालों ने पहले की तरह ही घास के गट्ठरों की सीढियाँ बना कर घोड़े को नीचे उतार दिया और उसे मंदिर के पिछवाड़े बाँध कर चुपके से अपने अपने घर की राह ली।

जब दूसरे दिन साहब उठे तो उन्होंने अपने घोड़े को उसकी जगह बँधा पाया। उन्हें बहुत खुशी हुई और साथ ही साथ देवता की महिमा पर बड़ा अचरज भी हुआ। तब से उस गाँव वालों पर उनकी श्रद्धा बहुत बढ़ गई। कहा जाता है कि उन्होंने उस देवता की पूजा के लिए दस बीघे जमीन भी दिला दी।

इस तरह यह कहावत उस गाँव में पैदा हुई और धीरे धीरे सब जगह चल पड़ी।
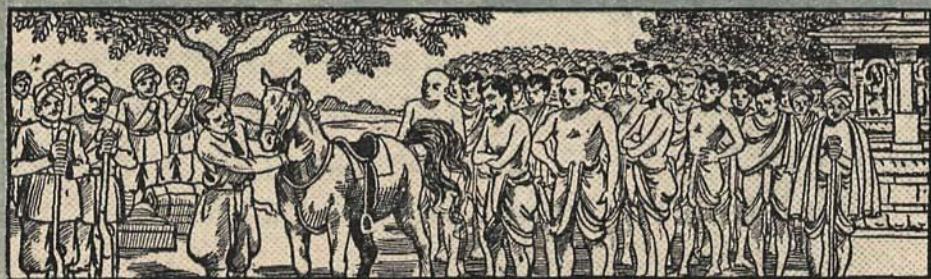
भगवान विट्ठल को अपने भक्तों से बहुत प्रेम है। उनके भक्त सिर्फ़ आदमी ही नहीं होते; पशु-पक्षी, कीड़े-मकोड़े, कोई भी उनके भक्त बन सकते हैं। भगवान सब पर कृपा करते हैं।

एक बार भगवान को अपना कृष्णावतार याद हो आया। उनके मन में वंशी बजाने की इच्छा हुई और वे बजाने लगे। उनके मुरली-गान से सारी प्रकृति मुग्ध हो गई। वहीं नज़दीक में कुछ गौएँ चर रहीं थीं। उनमें से एक मुरली के स्वर से इतनी मुग्ध हुई कि उसके थन से दूध चूने लगा। उसी समय हवा का एक झोंका आया और उस दूध में से एक बूँद छिटक कर भगवान के सिर पर जा पड़ी।

भगवान अपनी कनखियों से यह सब देख रहे थे। उस गाय को यों सुध-बुध खोते देख कर वे बहुत प्रसन्न हुए। दूध की एक बूँद उनके सिर पर क्या पड़ी, उन्होंने समझा कि गाय ने अपने दूध से उनका अभिषेक ही किया। तुरन्त उन्होंने उस गाय को अपना भक्त मान लिया।

भगवान के मंदिर के सामने ही एक पीपल का पेड़ था। एक कौआ रोज आकर उस पर बैठा करता था। एक दिन भगवान का एक भक्त खीर लेकर भगवान को भोग लगाने आया। उसके चले जाने के बाद भगवान के आगे पड़े हुए अन्न के दाने देख कर वह कौआ बड़े वेग से उनकी ओर झपटा। उसके पंख फड़फड़ाने से भगवान के आगे जमी हुई सारी धूल उड़ गई, जैसे किसी ने झाड़ू लगा दी हो।

भगवान तुरन्त उस कौए पर प्रसन्न हो गए। 'तूने मेरे आगे झाड़-बुहार कर साफ़ कर दिया है। तू मेरा बड़ा भक्त है।' उन्होंने कहा।

रामदीन शर्मा

उसी समय एक हंस वहाँ आया। वह शायद किसी सरोवर में जी भर तैर कर आ रहा था। क्योंकि उसके पंख भींगे हुए थे। उसने भगवान के आगे आकर पंख जो फड़फड़ाए तो चारों ओर पानी के नन्हे फुहारे से पड़ गए।

'कौए ने झाड़ू लगा दी। तूने छिड़काव कर दिया। तू भी मेरा भक्त है।' भगवान ने उस पर प्रसन्न होकर कहा। वे सोचने लगे कि 'झाड़ू देना और छिड़काव करना तो हो गया। अब कोई आकर चौक पूर जाए तो अच्छा हो।'

इतने में एक तोता उड़ता उड़ता वहाँ आया और एक खम्भे पर बैठ गया। उस तोते की चोंच में मोतियों की एक माला लटक रही थी। वह हार एक राजकुमारी का था और तोता उठा लाया था। उसने हार को पंजों से पकड़ कर चोंच मारना जो शुरू किया तो धागा टूट गया और मोती भगवान के आगे चारों ओर बिखर पड़े।

'वाह! वाह! तोतेराम! तुमने मेरे मंदिर में मोतियों का चौक पूर दिया। तुम तो कौए

और हंस से भी बड़े भक्त हो गए।'
भगवान ने कहा।

इतने में एक चूहा दौड़ता हुआ वहाँ आ गया। उसके पीछे पीछे एक साँप भी लपका आया लेकिन भगवान को देखते ही वह साँप चूहे की बात ही भुला कर, टकटकी लगा कर उनकी तरफ़ देखने लगा। उस साँप को विट्ठल भगवान से उतना प्रेम था!

'भगवान के आगे झाड़-बुहार हुआ, छिड़काव किया गया, किसी ने चौक भी पूर दिया। मगर दिया तो नहीं जलाया गया?' साँप ने मन में सोचा।

बच्चो, तुम जानते ही हो कि साँप के माथे पर मणि होती है। अब साँप फन खोल कर भगवान के सामने खड़ा हो गया और उसकी मणि के प्रकाश से सारा मंदिर जग-मग जग-मग करने लगा। इस तरह साँप ने भगवान के आगे दिया जलाया।

'धन्य हो सर्पराज! आज से तुम भी मेरे भक्त गिने जाओगे!' भगवान ने कहा और उसे भी अपना भक्त बना लिया।

थोड़ी देर में भौंरों का एक झुण्ड वहाँ आया। उनमें से एक भौंरा भगवान

के चरणों में पड़े हुए एक फूल पर जा बैठा और उनके स्पर्श से पवित्र मकरन्द पीने लगा। तुम तो जानते ही हो कि भगवान के चरणामृत के लिए बड़े बड़े भक्त और ज्ञानी लोग भी तरसते रहते हैं! इस तरह वह दुर्लभ मकरन्द पी कर वह भौंरा पावन हो गया और भगवान का प्रमुख भक्त बन गया। आख़िर ये गाय, कौआ, हंस, साँप, तोता और भौंरा भक्त बन कर किस तरह मुक्त हो गए, बताता हूँ सुनो :—
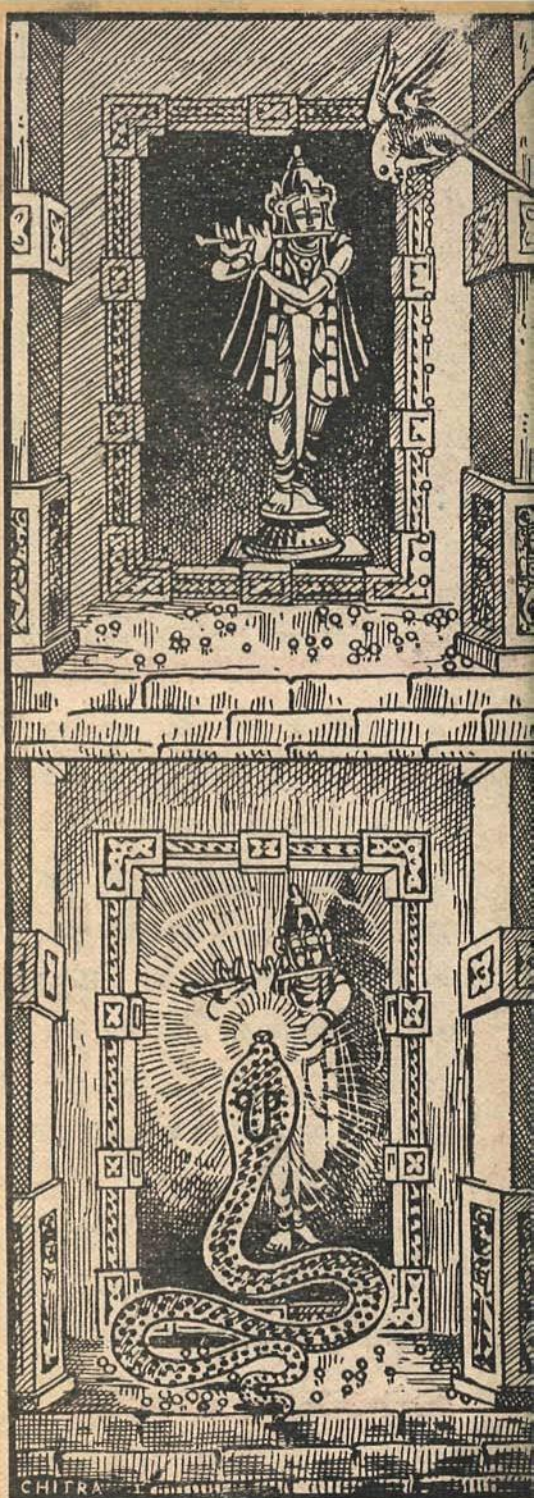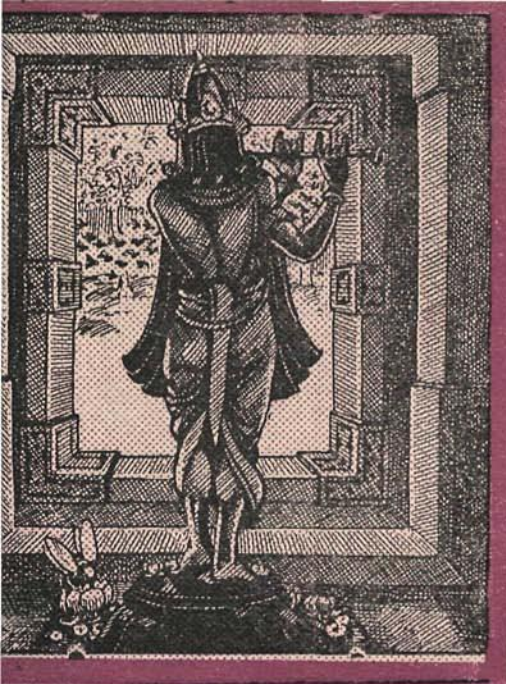
वह गाय बहुत दिन तक जीने के बाद आख़िर बूढ़ी होकर मर गई। वह भगवान की कृपा से अगले जन्म में एक विष्णु-भक्त की लड़की होकर पैदा हुई। उसके पिता ने उसका नाम प्रेम से सुशीला रखा। वह लड़की अपने नाम को सचमुच चरितार्थ करने वाली थी।

जब सुशीला सयानी हो गई तो उसका ब्याह कर दिया गया। वह लड़की जितनी गुणवती थी उसका पति उतना ही दुष्ट और कंजूस निकला। वह रुपए के लिए नीच से नीच कार्य करने को भी तैयार रहता था। उसके पास खाने-कपड़े के लिए काफ़ी था। तो भी वह दूसरों के आगे जाकर हाथ पसारता और कोई न कोई झूठे बहाने बना कर रुपए माँग लाता। लेकिन ये रुपए भी वह ख़र्च नहीं करता। वह उन्हें थैलियों में जमा करता। तिस पर वह हमेशा किसी न किसी बहाने से हमेशा सुशीला को मारा-पीटा करता था। लेकिन वह बेचारी कभी चूँ तक नहीं करती थी। वह पतिव्रता थी। इसलिए सब कुछ सह लेती थी।

उस ब्राह्मण के रिश्तेदारों को उसका स्वभाव मालूम था! इसलिए वे सभी उससे कतराये से रहते थे। अगर वे कभी उसके घर आते भी तो ठहरते नहीं। अगर वे ठहरना

भी चाहते तो ब्राह्मण कोई न कोई झूठ-मूठ का बहाना बनाकर उन्हें टाल देता। लेकिन सुशीला को इससे बड़ा दुख पहुँचता था। क्योंकि उसे अतिथि-सत्कार करने में बड़ा आनन्द आता था। उसका विश्वास था कि अतिथि की सेवा करना भगवान की सेवा करना है। लेकिन वह पति की इच्छा के विरुद्ध क्या कर सकती थी?

भगवान ने देखा कि उनकी कृपा से वह गाय मनुष्य की योनि में सुशीला बन कर पैदा तो हुई। लेकिन वह अपने पति के कारण बहुत कष्ट पा रही है। उन्हें उस पर बहुत तरस आया। इसलिए वे एक दिन एक ब्रह्मचारी का वेष धर कर चुपके से उसके घर पधारे।

उस समय सुशीला का पति कहीं गाँव गया हुआ था। भगवान ने सोचा—'सुशीला के अतिथि-सत्कार की परीक्षा लेने का यही अच्छा मौक़ा है।' उन्होंने उसके घर जाकर पुकार कर कहा—'माई! बहुत भूख लग रही है। क्या मुझे कुछ खाने को नहीं दोगी?'
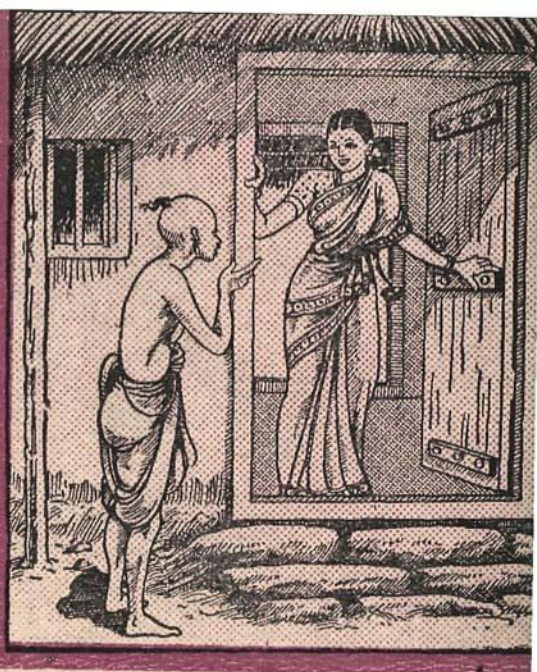
'जरूर दूँगी, बेटा! तनिक ठहर जाओ! अभी खाना पका कर खिला देती हूँ।' सुशीला ने जवाब दिया।

'नहीं, नहीं! अब मुझसे बिलकुल नहीं रहा जाएगा। बहुत भूख लग रही है। अगर बासी भात भी हो तो खिला दो। यह न सोचो कि मेहमान को बासी भात कैसे खिलाऊँ। जब जान पर बन पड़ती है, तब इन सब का विचार नहीं किया जाता। अगर तुमने मेरे पेट की आग बुझाई तो समझ लो कि सारा संसार तृप्त हो जाएगा। अगर बासी भात खाने से पाप भी होगा तो जप करके मिटा लूँगा।' उस ब्रह्मचारी ने उतावली करते हुए कहा।

अब बेचारी सुशीला क्या करती? उसने पीढा लगा कर पत्तल बिछा दिया और बासी भात की हाँडी लाकर जो कुछ था सब परोस दिया। परोस कर वह घर का काम-काज करने चली गई। लेकिन जब दो तीन क्षण में उसने लौट कर देखा तो पत्तल साफ़ था। कहीं एक दाना भी न बचा था। वह झूठा ब्रह्मचारी पलक मारते सब चट कर खाली पत्तल के सामने बैठा था।

उसने कहा—'माई! मुझे तो अब भी भूख लग रही है। देखो तो, हाँडी के तले में कहीं एकाध दाने बचे हैं कि नहीं?'
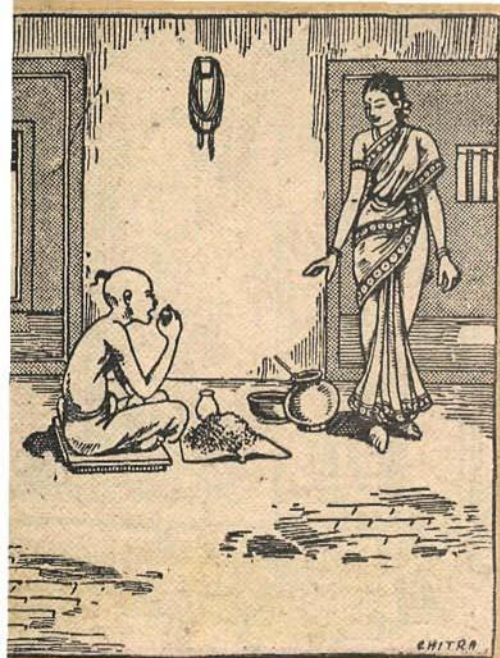
सुशीला ने हाँडी में देखा। लेकिन उसे कहीं एक भी दाना नहीं दिखाई दिया। बेचारी ने तीन दिन से हर जून पति के लिए खाना पकाया था। लेकिन वे जब नहीं आए तो उसने पतिव्रता होने की वजह से खुद भी न खाकर सारा खाना बासी भात की हाँडी में डाल रखा था। अब इस बौने ब्रह्मचारी ने सारी हाँडी साफ़ कर डाली। उसे बड़ा अचरज हुआ। तिस पर तुर्रा यह कि वह कहता है—मेरी भूख अब भी नहीं मिटी।

सुशीला ने सोचा—मुँह बाए खड़े रहने से कोई फ़ायदा नहीं। उसने घर में जो कुछ खाने के लिए था सब कुछ उसके सामने लाकर रख दिया। वह सब हड़प गया। उसने कड़ाही में का सारा दूध लाकर रख दिया। वह उसे भी पी गया। तो भी उसकी भूख नहीं मिटी! उसने कहा—'माई! क्या और कुछ नहीं बचा है?'

तब सुशीला को याद आया कि उसने पति के लिए उसके गाँव जाने के पहले ही लड्डू वग़ैरह कुछ मिठाइयाँ बना कर रख दी थीं। लेकिन उसके पति ने कंजूसी के मारे

थोड़ी सी खाकर बाकी मचान के ऊपर छिपा दी थीं। शायद उन्हें लाकर देने से इस लड़के की भूख मिटे।

सुशीला को मालूम था कि लौटने के बाद पति उन मिठाइयों को गिनेगा और उसे पीटेगा। तो भी उसने मेहमान की भूख मिटाने के लिए वे पकवान लाकर उसके सामने रख दिए। तुरन्त वह ब्रह्मचारी उन्हें साफ़ कर गया। अब भी वह आसन से नहीं उठा। 'माई! और कुछ दो न?' उसने फिर कहा।

अब सारा क़िस्सा सुशीला की समझ में आ गया। उसने जान लिया कि यह बौना ब्रह्मचारी कपट-वेष में है। उसने यह भी अनुमान कर लिया कि भगवान ही इस रूप में उसके घर पधारे हैं। तब उसने सोचा— मैं भगवान की भूख कैसे मिटाऊँ?

आख़िर यों ही थोड़ी देर सोचने के बाद उसे एक उपाय सूझा। उसने सुन रखा था कि पतिव्रता स्त्रियों के लिए अग्निदेव पिता के समान हैं और वे हमेशा उनकी सहायता करते हैं। इसलिए उसने अग्नि-देव की प्रार्थना की। तुरंत अग्नि-देव ने

प्रत्यक्ष होकर उसका सारा घर तरह तरह की मिठाइयों, नमकीनों, पकवानों और छप्पनों व्यञ्जनों से भर दिया।

यह देख कर भगवान विठ्ठल ने निजी रूप धारण कर सुशीला को दर्शन दिया और कहा—'सुशीला! तुम सच्ची पतिव्रता हो। इसीलिए अग्नि-देव ने प्रार्थना सुनते ही तुम्हारी सहायता की। मैं भी तुम्हारे अतिथि-सत्कार और श्रद्धा से प्रसन्न हूँ। बोलो, तुम कौन सा वर चाहती हो?'

'भगवान! मुझे मुक्ति दीजिए!' सुशीला ने कहा।

'मुक्ति तो तुम्हें दूँगा ही। लेकिन पहले तुम बेटों और पोतों के साथ फल-फूल कर संसार का सुख भोग लो!' भगवान ने कहा। 'भगवान! मेरे तो एक लड़का भी नहीं! फिर नाती-पोतों की तो बात ही क्या?' सुशीला ने जवाब दिया।

'तुम्हारे एक नहीं, पाँच लड़के पैदा होंगे। वे पाँचों भी अपने पहले जन्मों में मेरे भक्त थे। तुम भी पहले जन्म में एक गाय थीं। लेकिन तुम्हारी भक्ति से प्रसन्न होकर मैंने तुम्हें मानव-जन्म दिया। उसी तरह एक कौआ, एक हंस, एक तोता, एक साँप और एक भौंरा भी मेरे भक्त बने। वे पाँचों अब तुम्हारी कोख से पैदा होंगे।' यह कह कर भगवान अन्तर्धान हो गए।

जाते जाते भगवान ने सुशीला की एक और भलाई भी की। उन्होंने उसका साँसारिक जीवन सुखमय बनाने के लिए उसके पति का स्वभाव बदल दिया। अब उसकी सारी कंजूसी, नीचता और दुष्टता दूर हो गई। घर लौटते ही वह कंजूस से बड़ा भारी दानी बन गया। उसने झूठ बोल कर दूसरों के आगे हाथ पसारना छोड़ दिया।

कुछ ही दिनों में सब लोग उसकी बड़ाई करने लगे। अब वह सुशीला को कभी मारता-पीटता नहीं था। यहाँ तक कि उसकी एक भी बात नहीं टालता था। उस दिन से उन दोनों का जीवन सुख से बीतने लगा।

एक एक करके सुशीला के पाँच लड़के पैदा हुए। उन लड़कों के शादी-ब्याह हुए और उनके भी लड़के पैदा हुए। इस तरह बहुत दिनों तक सुख-पूर्वक जीवन बिताने के बाद सुशीला ने पति के साथ मोक्ष प्राप्त किया।

किसी गाँव में एक किसान रहता था। उसके एक ही लड़का था। उसका नाम धन्ना था। जब धन्ना बड़ा हो गया तो सुखिया नाम की लड़की से उसका ब्याह कर दिया गया। सुखिया के कई साल तक कोई बाल-बच्चे न हुए। बहुत व्रत किए गए। देवी-देवताओं को मनाया गया। आख़िर बहुत दिन बाद एक लड़का पैदा हुआ।

लड़का होने के बाद धन्ना फूला न समाया। उसने सोचा कि पिता बन जाने के बाद उसकी जिम्मेदारी बहुत बढ़ गई है। पहले वह पिता के कोई काम बताने पर खूब मन लगा कर नहीं करता। लेकिन अब पिता के कहने की भी ज़रूरत न थी। वह अपने आप मन लगा कर घर का और खेती-बाड़ी का सारा काम करने लगा।

उस किसान का खपड़ैल मकान था। उसे छाए हुए बहुत दिन बीत गए थे। इसलिए सारा घर चू रहा था। उसे फिर से छाना था। किसान ने कहा कि उसे मजदूरों से छवा लेंगे। लेकिन धन्ना राजी न हुआ। 'घर छाने के लिए मजदूरों की क्या जरूरत है? क्या हम दोनों यह काम नहीं कर सकते? बेकार पैसा क्यों ख़राब करें? उस पैसे से बच्चे के लिए कुछ न कुछ ख़रीद सकते हैं।' उसने कहा। यह सुन कर किसान ने मजदूर नहीं बुलाए।

मजदूर होते तो वे नौ दस बजे के पहले कभी काम नहीं शुरू करते। लेकिन धन्ना तड़के ही छप्पर पर चढ़ गया। पुराने खपड़े नीचे फेंक कर वह नए खपड़ों से घर छाने लगा। इस काम में किसान, उसकी स्त्री

रमणलाल
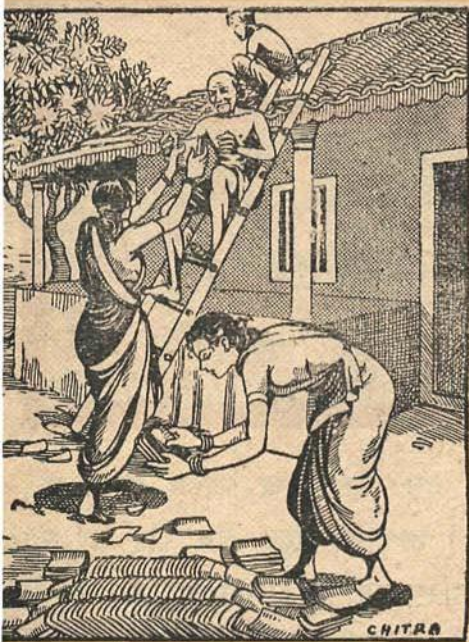
और उसकी बहू, तीनों ने हाथ बँटाया। दस बजते बजते बहुत कुछ काम हो गया। किसान थक कर छाँह में आराम करने के लिए बैठ गया। धन्ना की माँ रसोई बनाने गई। इतने में लड़का रोने लगा तो धन्ना ने बहू को भी भेज दिया और अकेले काम करता रहा। ग्यारह बज गए। तब उसकी माँ ने आकर कहा—'तुमने सबेरे कुछ जलपान भी नहीं किया था। आओ, खा-पीकर फिर काम शुरू कर देना।' लेकिन धन्ना नहीं गया। उसने कहा—'और थोड़ी दूर छाकर आ जाऊँगा।' बारह बज गए। सूरज ठीक सिर पर चमकने लगा। गर्मी के दिन थे। किसान ने खा-पीकर बाहर आकर देखा तो धन्ना काम कर ही रहा था। 'अरे भाई, अब बन्द कर दो न काम? जरा धूप कम होने के बाद फिर शुरू करेंगे।' उसने कहा। 'हर्ज क्या है?' अभी काम पूरा करके आ जाता हूँ।' धन्ना ने जवाब दिया। गर्मी की दोपहर की जलती धूप में अपने लड़के को भूखे-प्यासे काम करते देख कर पिता को बहुत दुख हुआ। उसने उसे तरह तरह से समझाया, फटकारा; आखिर गिड़गिड़ाया भी। लेकिन धन्ना नीचे न उतरा। पिता को बार बार अनुरोध करते देख कर वह झुँझलाया भी। 'मैं क्या कोई दुध-मुँहा बच्चा हूँ जो बार बार बुला रहे हो? तुम जाकर आराम करो न?' उसने कहा। लेकिन पिता का हृदय कैसे माने? अपने लड़के को मेहनत करते देख कर वह कैसे आराम करे? उसे कुछ न सूझा कि क्या करे? इतने में उसे धूल में खेलता हुआ पोता दिखाई दिया। तब उसे एक उपाय सूझा। वह लड़के को उठा कर घर के सामने ले गया। वहाँ उसने उसे

धूप में ऐसी जगह छोड़ दिया जहाँ से धन्ना उसे आसानी से देख सके। अपने लड़के को धूप में खड़ा देखते ही धन्ना फिर चिल्लाया—'अरे, देखते नहीं? लड़का धूप में खड़ा है! उसे अन्दर ले जाओ!' लेकिन किसान तो वहाँ था नहीं। वह अन्दर जाकर लेट गया था। 'अरे, कोई सुनता ही नहीं! मुन्ने को छाँह में ले जाओ!' धन्ना झट चिल्लाया। इतने में लड़के के पैर जलने लगे और वह रोने लगा। धन्ना का चिल्लाना सुन कर सास और बहू दोनों अन्दर से दौड़ीं। इसके पहले ही धन्ना जल्दी-जल्दी उतरा और लड़के को उठा कर घर में ले जाकर रख दिया। 'आज पिताजी को क्या हो गया है? उन्होंने बच्चे को धूप में छोड़ दिया था!' उसने अपनी माँ से कहा।

'क्यों, इसमें हर्ज क्या है?' यह सुन कर किसान ने जवाब दिया।

'अगर धूप लग जाती तो?' धन्ना ने क्रोध से कहा।

'हाँ अब, तुम रास्ते पर आ गए! क्या अब तुम्हारी समझ में आ गया कि तुम्हें धूप में काम करते देख कर मेरे मन को कितनी पीड़ा हो रही थी? मैंने तुम्हें बार बार काम बन्द करने को कहा था। लेकिन क्या तुमने मेरी बात पर कुछ भी ध्यान दिया? नहीं, जब तुम्हारा लड़का धूप में खड़ा हो गया तब तुम्हें छप्पर पर से उतरने की सूझी। जान लो, हर एक को अपने लड़के से वैसा ही प्रेम रहता है।' किसान ने धन्ना से कहा।
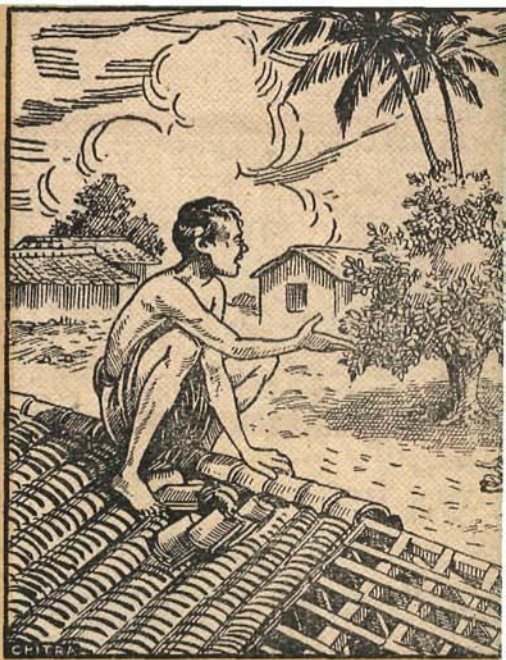
तब धन्ना की आँखें खुलीं। उसकी समझ में आ गया कि उसके पिता क्यों बार बार उससे नीचे उतरने का आग्रह कर रहे थे।

पुराने जमाने में जलधर नाम का एक मछुआ रहता था। वह मछली मारने में बड़ा होशियार था। लेकिन वह हमेशा इधर-उधर घूमता रहता था। कभी मन लगा कर काम नहीं करता था। इसलिए उसकी बीबी और बाल-बच्चों को बहुत कष्ट होता था।

एक रात की बात है। उस मछुए ने एक सपना देखा। उस सपने में कोई उससे कह रहा था—'ओ जलधर! तुम अपने बाल-बच्चों को कब तक भूखों मारोगे? मेरी बात सुनो। कल सबेरे उठते ही पूरब की ओर जाना। कुछ दूर जाने पर शुक-सरोवर नाम का एक तालाब दिखाई देगा। उस तालाब के किनारे पीपल का एक पेड़ है। पीपल की एक टहनी तोड़ कर उससे तुम तालाब का पानी पीटो। फिर देखो, क्या होता है? विश्वास रखो; इससे तुम्हें बहुत लाभ होगा।'

यह सुनते ही जलधर का सपना टूट गया। पर उसको अपने सपने पर कुछ भी विश्वास न हुआ। इसलिए वह करवट बदल कर फिर खुर्राटे लेने लगा। सबेरे उठ कर वह पूरब की ओर नहीं गया।

लेकिन दूसरी रात को भी उसने वही सपना देखा। तो भी उसको सपने की बात पर विश्वास नहीं हुआ।

लेकिन जब लगातार दस दिन तक सपने में उसे वही शब्द सुनाई दिए तो उसने सोचा कि हो न हो; इसमें कुछ न कुछ रहस्य जरूर है।

वह दूसरे दिन सबेरे उठ कर उस सरोवर के पास गया और पीपल की एक टहनी तोड़ कर पानी को पीटने लगा। शाम तक वह पानी पीटता ही रहा।

आखिर उस जगह एक भँवर पैदा हो

राकेश प्रसाद

गया और उसमें से एक नाग-कन्या निकली।

'तुम क्या चाहते हो?' उसने पूछा।

'मैं धन-दौलत चाहता हूँ।' जलधर ने जवाब दिया।

'अच्छा, मैं तुम्हें एक हीरा देती हूँ। उसे ले जाओ। उससे तुम्हारी इच्छा पूरी हो जाएगी। लेकिन इसके बदले तुम्हें अपने बेटों में से एक को मुझे देना पडेगा।' उस देवी ने कहा।

तब जलधर ने सोचा—'जल में रहने वाली यह देवी जमीन पर नहीं आ सकती। फिर कैसे मेरे घर आकर मेरे बेटे को ले जाएगी? इसलिए इसकी बात मान लेने में कोई हर्ज नहीं।' यह सोच कर जलधर ने नाग-कन्या की शर्त मंजूर कर ली।

देवी ने एक लाल लाल चमकता हुआ हीरा उसे दिया। लेकिन हाथ में लेते समय वह हीरा नीचे गिर गया और मुट्ठी भर राख बन गया। यह देख कर जलधर बहुत पछताया।

लेकिन देवी ने उसे धीरज देकर कहा—'घबराओ नहीं; यह राख ही तुम्हारे काम आएगी। इसे लगा कर तुम जहाँ जाओगे वहीं कामयाबी मिलेगी। इसे पानी में घोल कर पी लेने से भयङ्कर रोग भी दूर हो जाएँगे। अब तुम जाओ।'
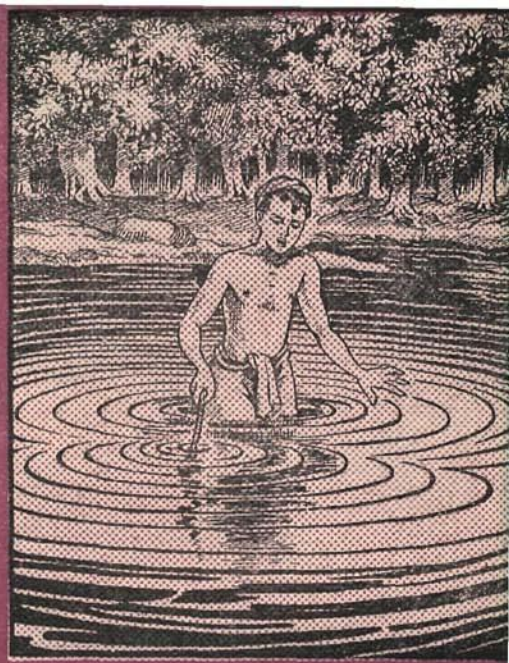
तब जलधर ने पूछा—'देवी! यह राख तो बहुत थोड़ी है। जल्दी ही ख़तम हो जाएगी। तब मैं क्या करूँगा?'

तब देवी ने कहा—'इसकी चिन्ता मत करो। तुम फिर यहाँ आ जाना। मैं और थोड़ी सी राख दे दूँगी। मगर उसके बदले एक और लड़के को मुझे सौंपना होगा।' यह कह कर देवी ओझल हो गई।

तब जलधर खुशी-खुशी घर गया। दूसरे दिन मछलियाँ बेचने पर उसको बहुत सा रुपया मिला। किन्तु घर लौटते ही उसकी स्त्री ने रोते-पीटते हुए कहा—'मुन्ना घर से ग़ायब है। न जाने कहाँ चला गया?'

तब मछुए ने अपनी स्त्री से सारा किस्सा कह दिया। 'तुम कुछ चिन्ता न करो। चार बेटे काफी हैं।' उसने उसे धीरज बँधाया।

इस तरह जलधर कुछ दिनों तक खूब सुख-चैन से रहा। पर एक दिन हीरे की राख ख़तम हो गई। वह फिर नाग-कन्या के पास जा पहुँचा।

देवी ने फिर थोड़ी सी राख उसे दे दी। लेकिन इसके बदले उसका और एक प्यारा लड़का ग़ायब हो गया।

इस बार भी जलधर ने अपनी स्त्री को किसी तरह समझा-बुझा दिया।

यों एक-एक करके उसने अपने पाँचों बच्चों और आख़िर अपनी स्त्री को भी खो दिया। रुपया-पैसा तो उसने बहुत कुछ कमाया। लेकिन हाथ में बचा कुछ भी नहीं। ग़ज़ब तो यह था कि जब तक हीरे की राख उसके पास रहती, तब तक धन-दौलत भी साथ देती। लेकिन राख ख़त्म होते ही वह पहले की तरह ग़रीब हो जाता था।

अब वह जिस काम में हाथ डालता वही बिगड़ जाता। आख़िर सब लोग उसकी खिल्ली उड़ाने लगे। कुछ दिन में उस मछुए का जीना दूभर हो गया। उसने जंगल की राह पकड़ी।

राह में उसे एक जगह एक छोटा सा तालाब दिखाई दिया। उस तालाब में खूब बड़ी-बड़ी मछलियाँ थीं। उन्हें देख कर उसका मन एक बार खिल गया। उसने

जाल फेंका। लेकिन सब मछलियाँ भाग गईं। सिर्फ़ एक छोटी सी मछली फँस गई।

जब जलधर ने उस मछली को मारना चाहा, तो उसने मनुष्य की सी बोली में कहा—'पिता! पिता! मुझे मत मारो।'

यह सुन कर पहले तो उसे बड़ा अचरज हुआ। लेकिन धीरे-धीरे उसने जान लिया कि उसकी करनी के कारण उसके बाल-बच्चे ही इस रूप में यहाँ पड़े हैं। अब वह बेचारा बहुत पछताने लगा।

तब उसने शुक्र-सरोवर के पास जाकर देवी की प्रार्थना की। देवी के प्रत्यक्ष होने पर उसने कहा—'देवी! अब मुझे अक्ल आ गई है। अब मैं अपने किए पर पछता रहा हूँ। संसार में मुझे कुछ नहीं सुहाता है। इसलिए मैं फिर तुम्हारी शरण आया हूँ। लेकिन इस बार मुझे धन-दौलत वग़ैरह नहीं चाहिए। सिर्फ़ मुझे बिछुड़ों से मिला दो। इसके सिवा मैं और कुछ नहीं चाहता। बाल-बच्चों को खोकर मैं अब किसके लिए जीऊँ? मेरे लिए अब क्या रह गया है? इसलिए कृपा करके मुझे फिर अपने बाल-बच्चों से मिला दो! नहीं तो मुझे भी मार डालो या मछली बना कर उसी तालाब में छोड़ दो।' वह बहुत गिड़गिड़ाने लगा।
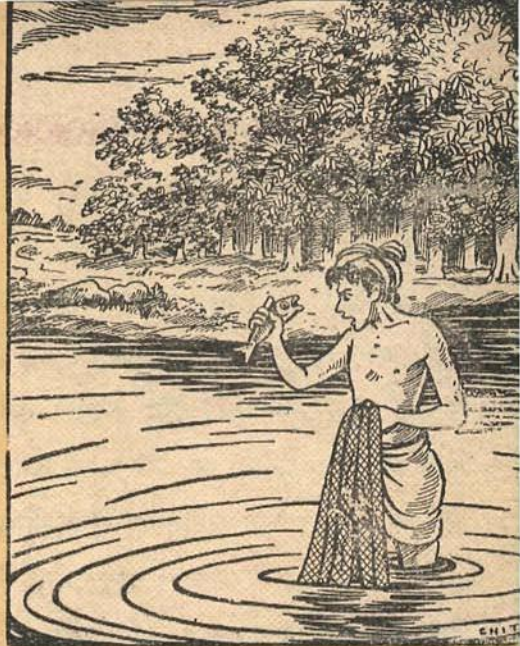
तब देवी ने कहा—'मूर्ख! अगर तुझे यह बात पहले ही सूझती तो कितना अच्छा होता? जब तेरे पास धन-दौलत थी तब तूने बाल-बच्चों का कुछ भी ख्याल नहीं किया। अब मैं क्या करूँ? मैं तो बदले में कुछ लिए बिना तुम्हारी कोई भलाई नहीं कर सकती।'

यह सुन कर जलधर ने सैकड़ों प्रणाम करके कहा—'देवी! अगर तुम चाहो तो

इतना आसानी से कर सकती हो। यह तुम्हारे लिए कोई बड़ी बात नहीं है।'

तब देवी ने तरस खाकर उसे एक सलाह दी—'अच्छा, सुनो! एक उपाय है। मैं तुम्हें एक साँप बना दूँगी जिससे तुम पानी में और जमीन पर, भी दोनों जगह चल-फिर सको। तुम जमीन पर से अनमोल हीरे और समुन्दर के तले से सुन्दर मोतियाँ निकाल-निकाल कर लाया करो और मुझे देते रहो। इस तरह तीन महीने तक मेरी सेवा करो। तीन मास पूरे होते ही तुझे बाल-बच्चों से मिला दूँगी।'

अब वह बेचारा मछुआ क्या करे? इनकार तो कर नहीं सकता था! क्योंकि देवी को खुश किए बिना वह कभी बाल-बच्चों से मिलने की आशा भी नहीं कर सकता था। इसलिए लाचार होकर उसने स्त्री और संतान के मोह से देवी की बात मान ली। तुरन्त जलधर एक साँप बन गया। अब वह तालाब में घुस कर अपने बाल-बच्चों को देख सकता था।

उसने तीन महीने तक दिन-रात मेहनत करके जमीन से हीरे और पानी से मोती निकाल कर देवी को ला दिए। जब तीन महीने बीत गए तो देवी ने प्रसन्न होकर कहा—'तुमसे मैं बहुत खुश हूँ। इसलिए अब मैं तुम्हें अपने घर जाने की इजाजत देती हूँ।'

यह कह कर उसने उसे फिर आदमी का रूप दे दिया। उसके बाल-बच्चे पहले ही शाप से छूट कर किनारे पर जा खड़े हो गए थे। देवी का आशीर्वाद पाकर वे सभी आनन्द से घर लौटे और सुख से जीवन बिताने लगे।

इस तरह सोलहों सिंगार करके नागवती जब उसके पास जाकर खड़ी हो गई तो उसे देख कर फकीर को और भी नशा चढ़ गया। 'क्यों मेरी जान! आज तो तुम पर आँख ठहरती ही नहीं!' उसने कहा।

'मेरा बारह साल का व्रत पूरा होने को आया है।' नागवती ने जवाब दिया।

यह सुनते ही फकीर खुशी से उछल पड़ा और चाहा कि उसे अपनी गोद में उठा ले।

लेकिन नागवंती ने उसे रोकते हुए कहा—'ठहरो! जरा ठहरो! अगर तुमने मुझे छुआ भी तो तुम्हारा सिर टूक-टूक हो जाएगा। व्रत पूरा होने में अभी नौ दिन बाकी हैं। इसलिए इन नौ दिनों तक तुम किसी तरह सब्र करो। उसके बाद मैं कहीं भागी तो नहीं जा रही हूँ।'

'तो क्या व्रत के बाद तुम मेरी इच्छा पूरी करोगी?' फकीर ने पूछा।

'हाँ! लेकिन उसके पहले एक बात पूछना चाहती हूँ।' नागवती ने कहा।

'पूछो! खुशी से पूछो! तुम्हें कौन रोकता है?' फकीर ने कहा।

'तो मुझे बता दो कि तुम्हारी जान कहाँ रखी है? क्योंकि अगर तुमको किसी ने मार डाला तो फिर कौन मेरी ख़बर लेगा?' नागवती ने कहा।

तब फकीर ने हँसते हुए कहा—'अरी पगली! मुझे कोई नहीं मार सकता। क्योंकि मेरी जान ऐसी जगह छिपी है कि किसी

को उसका पता नहीं लग सकता। मेरी जान के बारे में तुम कुछ फ़िक्र न करो! मैंने उसकी खूब अच्छी हिफ़ाजत कर रखी है।' फकीर ने उसे धीरज बँधाया।

नागवती ने मुँह फुला कर कहा—'मुझे कैसे विश्वास हो कि तुम्हारी जान को कोई ख़तरे में नहीं डाल सकता? हाँ, तुम अगर मुझे बता दो कि तुम्हारी जान कहाँ छिपी है, तो मुझे भरोसा हो जाए।'

'वह ऐसी जगह छिपी है जहाँ किसी इन्सान की तो बात ही क्या, देवताओं तक की पहुँच नहीं हो सकती। क्यों, अब तुमको विश्वास होता है कि नहीं?' फकीर ने जवाब दिया।

'अगर वह ऐसी जगह रखी है तो फिर बता देने में हर्ज क्या है?' नागवती ने गुस्सा दिखा कर कहा।

तब उस को राजी करने के ख्याल से फकीर ने अपने प्राणों का रहस्य बताना शुरू कर दिया—'सात सागर पार पत्थरों का देश है। पत्थरों के उस देश में पत्थरों का एक क़िला है। उस क़िले के बीच लोहे का क़िला है। उस क़िले में पाँच सौ बेल के पेड़, तीन सौ कटहल के पेड़, नौ सौ साल के पेड़ और सात सौ नीम के पेड़ हैं। इन पेड़ों के बीचों-बीच एक क़लमी आम का पेड़ है। उस पेड़ के खोखले में सात बर्रों के छत्ते हैं। सब से आख़िरी छत्ते में सोने का पिंजड़ा है। पिंजड़े में पाँच रंगों वाला सुग्गा है। उस सुग्गे की गर्दन में मेरी जान छिपी है। जब तक उस तोते के तन में प्राण रहेंगे, मैं भी नहीं मरूँगा।' फकीर ने नागवती को समझाया।

यह सुन कर नागवती ने बहुत खुशी जताई। लेकिन मन में उसके सारे मनसूबों पर पाला पड़ गया। उसका दुधमुँहा बच्चा सातों सागर पार कर, सभी क़िले लाँघ कर उस सुग्गे को कैसे पकड़ लाएगा? वह

फक़ीर को मार कर उसको क़ैद से कैसे छुड़ाएगा? तिस पर व्रत पूरा होने में सिर्फ़ आठ ही दिन बाकी हैं!

तो भी फ़क़ीर ने जो कुछ बताया वह एक पुरजे पर लिख कर नागवती ने बुढ़िया मालिन के द्वारा अपने लड़के को पहुँचा दिया। वह पुरजा देखते ही बालचन्द्र ने बुढ़िया से कहा—'नानी! पिताजी ने बहुत लोगों को उधार दिया था। उसकी मोहलत बीती जा रही है। इसलिए मैं जाता हूँ। रुपए वसूल कर लाऊँगा। खाना पका कर मुझे कुछ कलेवा दे दो!'

मालिन ने उसकी बात सच मान ली। उसने तुरन्त खाना पका कर उसे खिला दिया और कलेवा भी गठरी में बाँध दिया। बालचन्द्र झट वहाँ से चल दिया और चलते चलते दो तीन दिनों में तीन चार नगरों को पीछे छोड़ कर समुन्दर के किनारे पहुँच गया। वह वहाँ जाकर बारह शाख वाले एक बड के नीचे बैठ कर आराम करते हुए इस तरह सोचने लगा—'हाय! आठ दिन की अवधि में दो तीन दिन तो यों ही बीत गए। मैं

बिना किसी नाव के यह भयङ्कर समुद्र कैसे पार करूँ? कहीं बाकी दिन भी बीत गए तो फिर सब कुछ चौपट हो जाएगा। हाय! अब मैं क्या करूँ?' बालचन्द्र गहरी चिंता में पड़ गया।
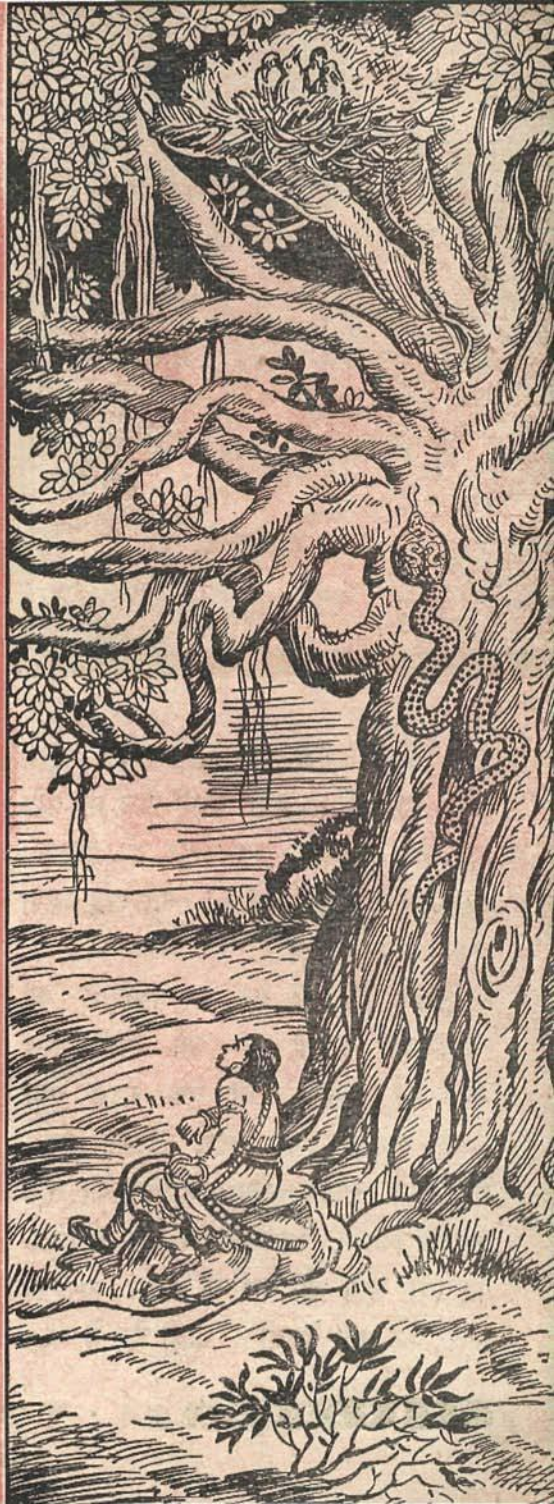
इतने में उसे पेड़ पर चिड़ियों की चीख-पुकार सुनाई पड़ी तो उसने सिर उठा कर देखा। उसे एक बहुत बड़ा काला नाग पेड़ पर चढ़ता दिखाई दिया। तब उसने अपनी तलवार निकाल कर साँप पर वार किया। उस साँप ने उस पर लपक कर उसे डसा और वार के कारण खुद भी तड़प कर जान दे दी। थोड़ी देर में जहर बालचन्द्र के खून में फैल गया। उसके अङ्ग ऐंठ गए। फेन उगलते हुए वह वहीं ठण्डा हो गया।

बालचन्द्र के मरते ही श्रीनगर में उसके लगाए हुए केले के पौधे सूख गए। तुरन्त नागवती की छहों बहनों ने जान लिया कि अब बालचन्द्र संसार में नहीं रहा। वे धाड मार मार कर रोने लगीं।

थोड़ी देर बाद दो बहुत बड़े पंछी अपनी चोंचों से एक हाथी को उठाए, समुन्दर पर से उड़ते हुए उस वट-वृक्ष के पास आए। बालचन्द्र ने इन्हीं पंछियों के बच्चों को बचाने के लिए अपने प्राण अर्पण किए थे। वे पंछी अब तक कई बार बच्चे जन चुके थे। लेकिन बार बार वह महा-सर्प उन्हें निगल कर भाग जाता था। लेकिन इस बार उनके बच्चे बच गए। पंछियों ने पेड़ के नीचे मरे पड़े हुए भयङ्कर साँप को देखा। बगल में बालचन्द्र की लाश पड़ी थी और उसकी खून से लथ-पथ तलवार भी दिखाई दी। बस, सारा क़िस्सा समझ में आ गया। तब नर पक्षी तुरन्त उड़ कर सञ्जीवन-पर्वत पर पहुँच गया। दूसरे दिन सबेरा होते होते वह सञ्जीवनी जड़ी ले आया। उसने वह जड़ी जब मरे

हुए बालचन्द्र की नाक पर धर दी तो वह झट आँख मलते हुए उठ बैठा। उसके उठते ही श्रीनगर में बेले के पौधे भी लहलहाने लग गए। नागवती की बहनों के आनन्द का ठिकाना न रहा। सारे शहर में उत्सव मनाया गया।

तब उन पंछियों ने बालचन्द्र से पूछा—'हे वीर पुरुष! तुमने हमारे बच्चों की जान बचाई है। बताओ, इसके बदले तुम्हारे लिए हम क्या करें?'

'मुझे सात सागर पार पत्थरों के देश में जाना है।' बालचन्द्र ने जवाब दिया।

'तो आओ, हम तुम्हें वहाँ पहुँचा देते हैं। हम तो रोज़ वहाँ आया-जाया करते हैं।' पंछियों ने कहा।

यह कह कर वे पंछी एक ताड़ का पेड़ उखाड़ लाए। उन्होंने अपनी चोंच से उस पेड़ के बीच तने में खोंखला बना दिया और बालचन्द्र को उसमें लेट जाने को कहा। फिर दोनों पंछी उसके दोनों सिरे चोंच से पकड़ कर उड़ने लगे। वे इस तरह उड़ते उड़ते सातों सागर पार कर पत्थरों के देश में, पत्थरों के क़िले लाँघ कर लोहे के क़िले के बीच जंगल में पहुँचे और वहाँ बालचन्द्र को जमीन पर रख दिया।
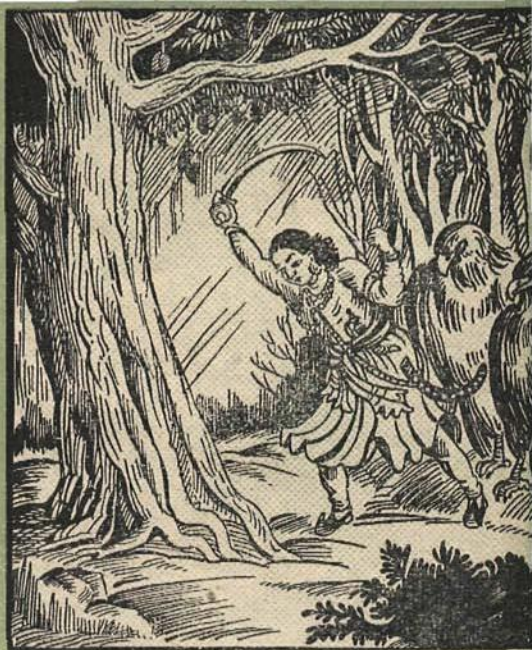
वह जंगल बहुत घना था। बालचन्द्र अपनी माँ का नाम लेते हुए, तलवार के एक एक वार से एक एक पेड़ को काटता हुआ मुश्किल से आगे बढ़ा और किसी न किसी तरह क़लमी आम के पेड़ के पास पहुँचा। उसने उसे भी एक ही वार में काट डाला। तब उसे बरों के छत्ते दिखाई दिए।

लेकिन इतने में उन पंछियों ने जो यह सब देखते वहीं खड़े थे, उसे मना करते हुए कहा—'ठहरो! क्या कर रहे हो? तुमने वह पेड़ क्यों काट डाला? उसी में भुतहे फकीर

की जान रखी है। अगर उसका बाल भी बाँका हुआ तो फकीर तुम्हें जीता न छोड़ेगा।'

'मैं फकीर के ही कहने से यहाँ आया हूँ। फकीर ने ही मुझे अपनी जान लाने के लिए भेजा है।' बालचन्द्र ने जवाब दिया।

'तुम उसकी जान ले कैसे जाओगे? उन छत्तों में जहरीले बर्रे हैं। उनके डङ्क की चोट खाकर कोई भी नहीं जी सकता।' उन पंछियों ने कहा।

'मैं उन्हें अपनी तलवार से मार डलूँगा।' बालचन्द्र ने जवाब दिया।

'उन लाखों बर्रों को तुम कैसे मारोगे? यह काम तुमसे होने वाला नहीं। क्यों बेकार जान गँवाते हो? चलो, चुपचाप लौट चलें।' उन पंछियों ने सलाह दी।

'तो मैं यहीं अपनी जान दे दूँगा। लेकिन फकीर की जान वाला सुग्गा लिए बिना यहाँ से नहीं टलूँगा। अगर चाहो तो तुम दोनों लौट जाओ।' बालचन्द्र ने हठ किया।

तब उन पंछियों ने थोड़ी देर तक आपस में कानाफूसी करके एक अच्छा सा उपाय सोचा। नर पक्षी ने बालचन्द्र को ले जाकर एक घनी झाड़ी में छिपा दिया। उसके बाद उसने उस आम के पेड़ को एक लात मारी। तुरन्त छत्तों को धक्का लगा और बर्रे सन्न की आवाज करते हुए उड़ने लगे। तब मादा पक्षी ने पूरी ताक़त लगा कर अपने पंख फड़फड़ाए। उसके इस तरह पंख फड़फड़ाने से ऐसी जोर की हवा चली कि उससे वे सब बर्रे मीलों दूर तक उड़ गए।

तब नर पक्षी अपनी चोंच से उस खोंखले में का पिंजड़ा उठा लाया। उसने उसे झाड़ी में बैठे हुए बालचन्द्र के हाथ में दे दिया और कहा—'बाबा! अब तक फकीर को मालूम हो गया होगा कि उसकी जान किसी की मुट्ठी में पड़ गई है। इसलिए वह तुरन्त यहाँ आ जाएगा।

अगर अब जरा भी देर करोगे तो हमारी जान भी खतरे में पड़ जाएगी। इसलिए उस सुग्गे को तुरन्त अपने काबू में कर लो!' उन्होंने उसे चेता दिया।

तुरन्त बालचन्द्र ने सुग्गे को पिंजड़े से निकाल लिया। उसने अपने दोनों कानों के कुण्डल निकाल कर उनसे उसके दोनों पैरों में बेड़ी सी पहना दी। बस, वहाँ नगवाडीह में फकीर के दोनों पैर निकम्मे हो गए। उसने सोचा—'या तो किसी दुश्मन ने मेरी जान चुरा ली है, या मेरा सुग्गा छूट कर बाहर उड़ते हुए किन्हीं लता-बेलों में फँस गया है।' इसके बाद वे पंछी बालचन्द्र को फिर ताड़ के खोंखले में बिठा कर घर की ओर उड़ चले। सातों सागर पार कर वे वट-वृक्ष के पास आ पहुँचे। वहाँ उन्होंने अपने बच्चों को चारा चुगाया। फिर बालचन्द्र से कहा—'आओ, अब हम तुम्हें घर पहुँचा दें!'

लेकिन बालचन्द्र ने कहा कि 'मैं पैदल ही चला जाऊँगा' और उनसे कृतज्ञता जता कर बिदा ली।

चार दिन तक लगातार चलने के बाद बालचन्द्र नगवाडीह में बुढ़िया मालिन के घर जा पहुँचा।
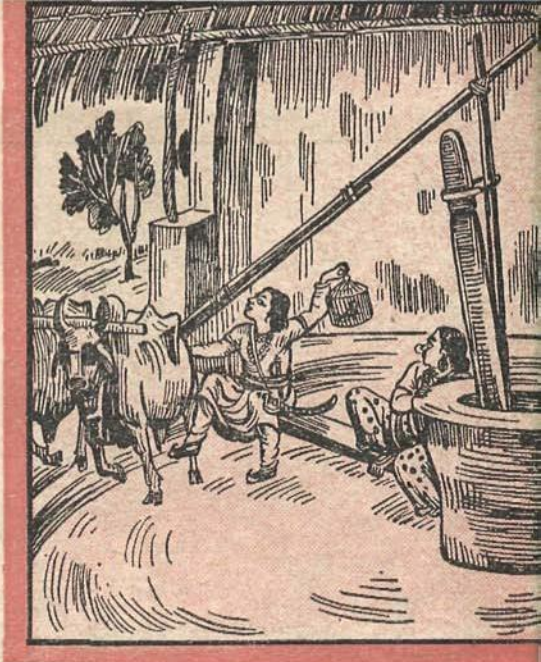
'क्यों, रुपए वसूल कर आए बेटा?' बुढ़िया ने पूछा।

'नहीं, मुझे देखते ही कर्जदार सब जहाँ के तहाँ भाग गए। इसलिए मैंने कागज-पत्र सब फाड़ दिए और चुपके से लौट आया।' बालचन्द्र ने जवाब दिया।

यह सुन कर बुढ़िया रोने-धोने लगी। तब बालचन्द्र ने उसे दिलासा देते हुए कहा—'रोओ नहीं, नानी! भगवान की कृपा से हम कुछ ही दिनों में मालामाल होने वाले हैं।'

इसके बाद बालचन्द्र हाथ में पिंजड़ा लिए प्यारी बाई के घर जा पहुँचा। बाहर एक नौकरानी कोल्हू में तेल

पेर रही थी। बालचन्द्र पिंजड़ा हाथ में लिए उछल कर कोल्हू पर चढ़ गया और बैल के साथ साथ चक्कर लगाने लगा। तुरन्त फकीर भी, जो बगीचे में सैर कर रहा था चक्कर लगाने लगा। बालचन्द्र ने बैल को और भी जल्दी जल्दी चलाया। वहाँ फकीर भी वेग से चक्कर मारने लगा। उसके बाद बालचन्द्र सुग्गे को हाथ में लेकर बाग में फकीर के नजदीक गया।

'अरे! तू मेरी जान चुरा लाया है। ला, वह मुझे दे दे!' फकीर ने कहा।

'अच्छा, अच्छा, देता हूँ; जरा ठहर! पहले यह तो बता कि नागवती तेरे क्या होती है?' बालचन्द्र ने पूछा। 'वह तो मेरी बीवी है।' फकीर ने जवाब दिया।

यह सुन कर बालचन्द्र को बहुत गुस्सा आ गया। उसने सुग्गे का गला पकड़ कर दबाया। तब फकीर 'हाय! हाय!' करता दोनों हाथ जोड़ कर बोला—'अरे, मुझे न मार! नागवती मेरी माँ होती है।'

तब बालचन्द्र ने कहा—'फकीर! मैंने सुना है कि तुम बहुत से मंतर-तंतर जानते

हो। मुझे भी एकाध मन्तर बता दो न!'
'मैं अपने मंतर किसी को नहीं बताता।' फकीर ने कहा।

'तब मैं इस सुग्गे की गरदन मरोड़े देता हूँ।' बालचन्द्र ने तोते का टेटुआ पकड़ा।

तब लाचार होकर फकीर ने अपने सारे मंतर बालचन्द्र को बता दिए। उसने अपनी जादू की लकड़ी, छड़ी वग़ैरह बालचन्द्र को दे दीं और इस्तेमाल भी सिखा दिया। फिर उसने पत्थर बने हुए बालचन्द्र के पिता को और सारी सेना को जिला दिया।

नागवती क़ैद से छूट गई। बालचन्द्र ने उसे पालकी में बिठाया। एक ओर फकीर और दूसरी ओर प्यारीबाई से उसे ढोकर ले चलने के लिए कहा। बेचारों को लाचार होकर वैसा ही करना पड़ा। आख़िर बुढ़िया मालिन को भी साथ लेकर सभी वहाँ से चल दिए।

वे नयन-नगर से होते हुए तोता-नगर जा पहुँचे। वहाँ बालचन्द्र ने अपने माँ-बाप की इजाजत लेकर उस नगर की राजकुमारी से जिसे उसी ने जिलाया था बड़ी धूम-धाम के साथ ब्याह कर लिया। वहाँ से गंगा-नगर जाकर उसने वहाँ की राजकुमारी से भी ब्याह कर लिया। इसके बाद सभी श्रीनगर जा पहुँचे। उन को देख कर नागवती की बहनें खुशी के मारे पागल सी हो गईं। सिर्फ नागवती ही कैद से नहीं छूटी; बल्कि उनके पति भी फिर से जी कर घर लौट आए। छहों बहनों ने फिर हाथों में चूड़ियाँ पहन लीं और माँग में सिंदूर लगा लिया। उनका खोया हुआ सुहाग उन्हें मिल गया। लेकिन इस आनन्द के समय भी एक बखेड़ा उठ खड़ा हुआ। नागवती के पति ने कहा—'यह इतने दिन तक फकीर की कैद में थी। कैसे विश्वास करूँ कि इसका पातिव्रत्य बना हुआ है? मैं इसे स्वीकार नहीं कर सकता।' तब बालचन्द्र ने
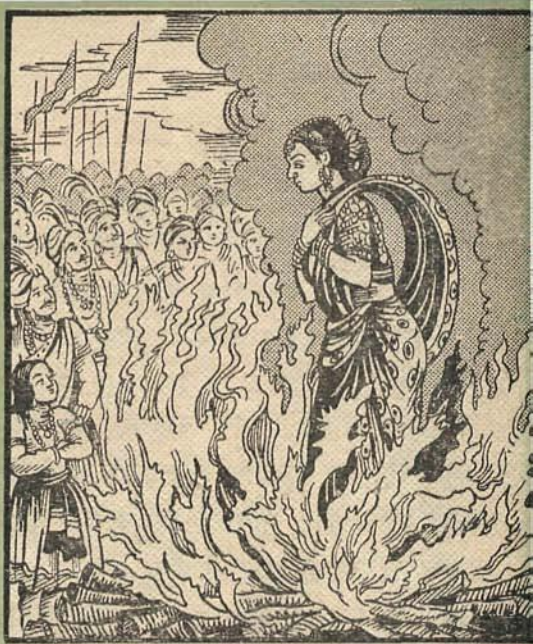
खौलते हुए तेल में अपनी अँगूठी डाल दी और माँ से निकालने को कहा। नागवती ने वैसा ही किया। तब उसके पति ने कहा— 'न जाने, यह फकीर के निकट कौन कौन से मंतर सीख आई है! मैं इस पर विश्वास नहीं कर सकता।' तब बालचन्द्र ने एक बहुत बड़ा गढ़ा खुदवाया और उसमें धधकती आग जलवा दी। नागवती उस आग में कूद पड़ी। पर उसका बाल भी बाँका न हुआ। न उसका आँचल ही जला; न उसका सिंदूर ही मिटा। बहुत देर तक उस आग में रह कर नागवती हँसती हुई बाहर निकली। तब उसके पति को विश्वास हो गया। उसे बहुत आनंद हुआ। सारे नगर में खुशियाँ मनाई जाने लगीं। बड़े बड़े जुलूस निकाले गए। चार पाँच दिन इसी तरह बिता कर बालचन्द्र फकीर के साथ फिर नगवाडीह गया। उसने वहाँ का सारा क़ीमती सामान गाड़ियों पर लाद कर श्रीनगर रवाना कर दिया। तब फकीर ने कहा—'अब मेरा सुग्गा मुझे दे दो न?'

लेकिन बालचन्द्र ने नहीं दिया। तब फकीर ने उतावली से झपट कर छीन लेना चाहा। नतीजा यह हुआ कि सुग्गे का सिर तो बालचन्द्र के हाथ में रह गया और धड़ फकीर के हाथ आ गया। तुरन्त भुतहे फकीर ने 'या अल्ला!' 'या खुदा!' कहते हुए जान छोड़ दी।

तब बालचन्द्र ने फकीर की लाश को दफनवा दिया और उसकी कब्रगाह के चारों ओर एक सुन्दर बग़ीचा लगवा दिया। वहीं उसने एक कोठी बनवा कर उसमें फकीर की सारी जायदाद रखवा दी। उसके बाद उसने बहुत से साधु-सन्यासियों और फकीरों को बुला कर दान-धर्म किया। फिर उसने फकीर की कब्र पर दिया बालने के लिए तीन फकीरों को नियुक्त किया और उन्हें फकीर की सारी जायदाद दे दी। इसके बाद बालचन्द्र श्रीनगर लौट कर सुख से राज करने लगा। वह अपने माँ-बाप के साथ बहुत दिन तक जीता रहा। [समाप्त]
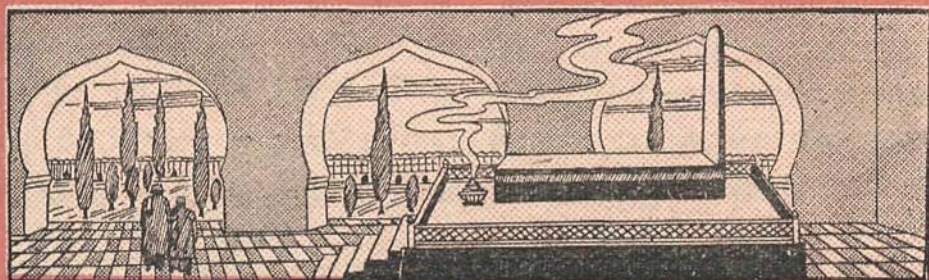
कहते हैं कि पुराने ज़माने में शाँतिपुर नाम का एक शहर था। उस शहर में रोज़ किसी न किसी घर में से एक न एक आदमी ग़ायब हो जाया करता था। बहुत लोगों ने इसके कारण की खोज की। लेकिन किसी को कुछ पता न चला।

आख़िर एक दिन वीरवर्मा नामक एक आदमी ने शहर वालों से कहा—'आप लोग घबराइए नहीं। मैं जाकर इस रहस्य का पता लगा आता हूँ। फिर देखेंगे कि इसके बारे में क्या किया जा सकता है?' यह कह कर वह एक घोड़े पर सवार होकर वहाँ से चला।

जाते जाते वीरवर्मा को एक बहुत ही ऊँचा बालू का टीला दीख पड़ा। उसके नज़दीक ही एक तालाब था। तालाब में एक नाव बँधी थी। तब तक वीरवर्मा बहुत थक गया था। इसलिए उसने सोचा—'चलूँ, तालाब में पानी पी लूँ और थोड़ी देर यहीं कहीं आराम कर लूँ।' यह सोच कर वह तालाब के किनारे आया। तालाब में ऐसे बड़े-बड़े कछुए दिखाई दिए कि वीरवर्मा अचरज में पड़ गया। नाव पर चढ़ कर वह तालाब में गया और एक छोटे से कछुए को पकड़ लाया। लेकिन न जाने कैसा जादू हुआ कि वह कछुआ पानी से निकलते ही बारह बरस का लड़का बन गया। उस लड़के ने डरते हुए वीरवर्मा से पूछा—'आप कौन हैं? कहाँ से आ रहे हैं? यहाँ क्यों आए हैं?'

'मैं शाँतिपुर का रहने वाला हूँ। मैं अभी....' वीरवर्मा अपनी बात भी पूरी न

धनसुख दास
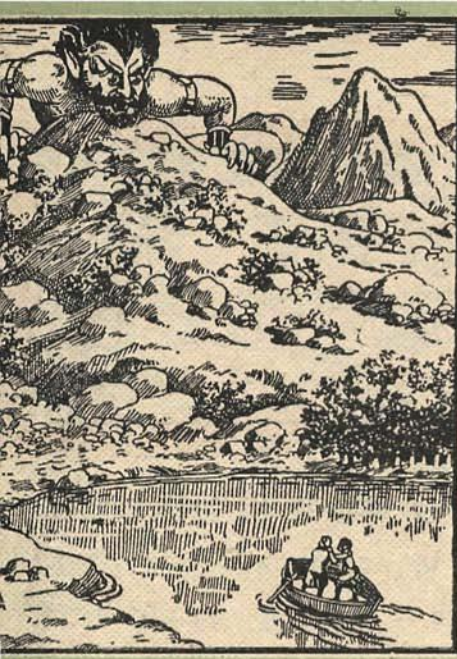
कर पाया था कि किसी ने उस बालू के टीले पर से गरज कर पूछा—'कौन शाँतिपुर का नाम ले रहा है?'

यह सुनते ही उस लड़के ने वीरवर्मा से कहा—'भागिए, अब यहाँ एक क्षण भी ठहरना ठीक नहीं। भागिए, तुरंत यहाँ से दूर हो जाएँ। चलते-चलते सारी बात बता दूँगा।' वीरवर्मा ने उस लड़के को भी घोड़े पर चढ़ा लिया और ऐंड़ लगा दी। थोड़ी दूर जाने पर लड़का कहने लगा—'अभी जो टीले पर चिल्लाया वह एक राक्षस है। उसका नाम है सिकतासुर। वह आस-पड़ोस के गाँवों से आदमियों को पकड़ लाता है और इस तालाब में डाल देता है। तालाब में कुछ ऐसा जादू है कि डूबते ही आदमी कछुआ बन जाता है। इस राक्षस को नींद बहुत प्यारी है। इसमें वह कुंभकर्ण से भी बाजी मारने वाला है। एक महीने तक आदमियों को ला लाकर तालाब में डालता जाता है और उसके बाद छः महीने तक सुख से सोता रहता है। जब वह जागता है तो वह बड़ा भूखा रहता है। बस, तालाब से कछुओं को निकाल लेता है। फिर उन्हें आदमी बना कर मजे से खा जाता है। आज आपने संयोग से मुझे बचा लिया है। लेकिन याद रखिए! राक्षस ने आपके गाँव का नाम सुन लिया है। वह ज़रूर आपके गाँव में आएगा और आप लोगों को चौपट किए बिना नहीं रहेगा।'

'अच्छा, देखा जाएगा! लेकिन पहले यह तो बताओ कि तुम किस गाँव के रहने वाले हो?' वीरवर्मा ने लड़के से पूछा।

'मैं आपके पड़ोस के ही गाँव का रहने वाला हूँ।' लड़के ने जवाब दिया।

तब वीरवर्मा ने उस लड़के को उसके गाँव पहुँचा दिया। फिर अपने गाँव जाकर

लोगों को सारा किस्सा सुनाया। वे अब और भी घबराने लगे।

कुछ दिन बाद सिकतासुर की नींद खुली और उठते ही वह तुरंत शाँतिपुर की खोज में चल पड़ा। सच पूछो तो वह पहले ही कई बार शाँतिपुर जा चुका था। लेकिन उसे उसका नाम नहीं मालूम था। इसलिए उसने सोचा कि कोई नया गाँव है। थोड़ी दूर जाने पर उसे एक मोची एक फटा हुआ बोरा कंधे पर लटकाए दिखाई दिया। उसे देखते ही राक्षस ने गरज कर पूछा—'शाँतिपुर किधर है?'

राक्षस को देखते ही मोची ने सोचा—'हाँ, तो यही वह राक्षस है जो आदमियों को उठा ले जाता है। अगर मैं इसे अपने शहर की राह बता दूँ तो यह सब को उठा ले जाएगा।'

यह सोच कर उसने कंधे पर से बोरा उतार कर नीचे रख दिया। उसमें बहुत से टूटे-फूटे जूते थे। उसने उन सब को बाहर निकाल कर राक्षस को दिखाया और कहा—'ऐ भलेमानुस! मैं शाँतिपुर से ही आ रहा हूँ। देखो, उस गाँव से चलते चलते

इतने जूते टूट गए। अब तुम्हीं सोच लो कि शाँतिपुर कितनी दूर है? हाँ, अगर तुम चाहो तो मैं लौटते वक्त तुम्हें अपने साथ शाँतिपुर ले जा सकता हूँ।'

'अच्छा, मैं यहीं रहूँगा। तुम जल्दी से लौट आओ। मैं भी तुम्हारे साथ शाँतिपुर चलूँगा।' राक्षस ने कहा।

मोची ने तुरंत शाँतिपुर जाकर अपने गाँव वालों से सारा हाल कह दिया। तब वीरवर्मा को एक उपाय सूझा। उसने तुरंत अपने गाँव वालों को साथ ले जाकर शाँतिपुर आने की राह में एक जगह एक बड़ी गहरी

खाई खुदवाई। उसने उस खाई को पत्तों, टहनियों और घास-फूस से ढँकवा दिया जिसमे कोई न जान सके कि वहाँ खाई है। तब उसने मोची के कान में कुछ कह दिया और उसे राक्षस के पास भेज दिया। फिर वह गाँव वालों सब के साथ नज़दीक की झाड़ियों में छिप गया।

थोड़ी ही देर में मोची ने राक्षस के पास लौट कर कहा—'चलो, मेरा काम हो गया। अब शाँतिपुर चलें।' तुरंत राक्षस मोची के पीछे पीछे चलने लगा। मोची जब खूब जल्दी जल्दी चलने लगा तो राक्षस थोड़ा पिछड़ गया। मोची ने आगे आगे चल कर खाई को बग़ल से पार किया और राक्षस को पुकारा—'अजी! जरा क़दम बढ़ाओ! अगर इस तरह हम दस बरस तक चलेंगे तो भी कभी शाँतिपुर न पहुँच सकेंगे।'

यह सुन कर राक्षस दौड़ने लगा और धड़ाम की आवाज़ के साथ खाई में जा गिरा। तुरंत वीरवर्मा और उसके गाँव वाले सभी झाड़ियों में से निकल आए। उन्होंने फुर्ती के साथ खाई को मिट्टी से पाट दिया। इस तरह राक्षस से पिंड छुड़ा कर वे सभी जादू के तालाब के पास गए। उन्होंने सभी कछुओं को पानी से निकाल लिया और उन्हें फिर आदमी बना लिया। तब सब लोग खुशी खुशी अपने गाँव लौट गए।

तब से गाँव वाले वीरवर्मा और उस मोची की चतुराई का खूब बखान करने लगे। उन्होंने उस गाँव का नाम भी बदल कर वीर-नगर रख दिया।

कुत्ते का मुँह हमेशा ठण्डा रहता है। जानते हो क्यों? इसकी कहानी सुनाता हूँ; सुनो। बहुत दिन पहले किसी गाँव में एक किसान रहता था। वह बड़ा कंजूस और निर्दयी था। उसे पैसा खर्च करना बिलकुल पसंद न था। एक एक धेले के लिए जान देता था।

उसके बच्चों ने एक कुत्ते को बड़े प्रेम से पाल रखा था। लेकिन यह उस किसान को बिलकुल भाता नहीं था।

पर किसान की स्त्री बहुत दयालु थी। वह किसान की तरह कंजूस भी न थी। वह उस कुत्ते को बहुत प्यार करती थी।

एक बार उस गाँव में हैजा फैला। लोग कीड़ों की तरह मरने लगे। यह देख कर गाँव वाले डर गए। उन्होंने तय किया कि गाँव छोड़ कर जान बचाना ही बेहतर है।

उस गाँव से बाहर कहीं भी जाने के लिए दो तीन दिन तक नाव में सफ़र करना पड़ता था। इसलिए हरेक गाँव वाले ने एक एक नाव किराए पर ले ली। दूसरे लोगों की तरह किसान भी अपने परिवार को साथ लेकर किराए की एक नाव पर चढ़ गया।

किसान की स्त्री और बच्चों ने कुत्ते को भी साथ ले जाना चाहा। लेकिन किसान झुँझला उठा—'जगह कहाँ है इसमें? हमें ही दिक्कत हो रही है।' लेकिन यह सुनते ही बच्चों ने मुँह लटका लिया। कुत्ते को छोड़ कर जाने के लिए वे किसी तरह राज़ी न होते थे। उसकी स्त्री ने भी बहुत हठ किया। तब आख़िर उसे कुत्ते को भी अपने साथ लेना पड़ा।

जब रात हुई तो किसान के परिवार वाले सो गए। लेकिन वह कुत्ता जाग कर पहरा देता रहा। कुछ समय बीतने पर कुत्ते ने देखा कि नाव में पानी बढ़ रहा है। घबड़ा कर उसने चारों ओर घूम-फिर कर देखा! एक छोटे से छेद से पानी आ रहा था।

यह देख कर कुत्ते ने सोचा—'सब लोग निश्चिन्त सो रहे हैं। कोई नहीं जानता कि नाव में पानी आ रहा है। अगर मैं देखता रह जाऊँ तो थोड़ी ही देर में नाव डूब जाएगी! अगर मैं भूँक कर शोर मचाऊँ तो इन सबकी नींद खराब हो जाएगी। हो सकता है कि ये लोग घबरा जाएँ और बच्चे रोना शुरू कर दें। इसलिए इन लोगों को जगाना ठीक नहीं। मैं अब क्या करूँ? इतने लोगों की जान कैसे बचाऊँ?'

यों सोचते सोचते कुत्ते को एक उपाय सूझ गया। तुरंत उसने अपना मुँह उस छेद में लगा दिया। इस तरह करने से उसको तकलीफ़ तो हुई, लेकिन पानी आना बन्द हो गया। कुत्ते ने अपने मालिक की जान बचाने के लिए अपना मुँह रात भर उस छेद से सटाए रखा।

सबेरा होते ही किसान जगा और कुत्ते को नाव की तख़्तियों से मुँह सटाए देख कर उसने सोचा—'जरूर कुछ खा रहा है!' वह लाठी लेकर उसे मारने गया। तब डर कर कुत्ता हटा और नाव में पानी आने लगा।

नाव में पानी आते देख कर किसान चौंक उठा। अब उसे कुत्ते की स्वामिभक्ति पर विश्वास हो गया। वह अपनी पिछली निर्दयता पर पछताया।

जल्दी से नाव किनारे पहुँचाई गई। किसान के बाल-बच्चों ने जब सारी बातें सुनीं तो वे कुत्ते को गोद में उठा कर नाचने लगे। वे पिता से कहने लगे—'देखा पिताजी! अगर यह कुत्ता न होता तो हमारी क्या हालत होती? आप तो इसे लाने ही नहीं देते थे!' कुत्ते की होशियारी और वफ़ादारी से उसके मालिक और उसके बीबी-बच्चों की जान बच गई। उसने रात भर छेद में अपना मुँह लगा कर पानी रोक लिया था न? इसलिए कहा जाता है, तभी से कुत्तों का मुँह ठण्डा हो गया।
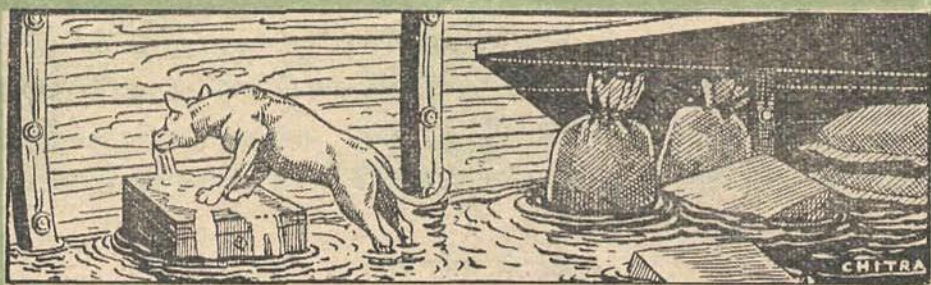
ऊपर के छः चित्रों में सब एक से दिखाई देते हैं। लेकिन वास्तव में दो अलग हैं। बताओ तो देखें, वे दोनों कौन से हैं? अगर न बता सको तो जवाब के लिए ५४-वाँ पृष्ठ देखो।

*

दाँतों के बारे में

नवजात शिशु के मुँह में हमें दाँत नहीं दिखाई देते। हम समझते हैं कि अभी बच्चे के दाँत नहीं निकले। लेकिन वास्तव में बच्चे के ऊपरी दस और निचले दस, कुल बीस दाँत कभी के तैयार होकर मसूड़ों के अन्दर छिपे रहते हैं। कोई निश्चित रूप से नहीं कह सकता कि बच्चे के दाँत कब निकलते हैं? लेकिन उनकी अपनी अपनी शारीरिक व्यवस्था के अनुसार छठे महीने से लेकर डेढ़ साल तक, जल्दी जल्दी या धीरे धीरे बीस दाँत निकल आते हैं। लेकिन उनके निकलने में अगर थोड़ी देर भी हो जाए तो घबराने की कोई बात नहीं। अगर बच्चा स्वस्थ हो, याने उसकी बढ़ती के लिए आवश्यक विटमिन और लवण आदि उसकी देह में हों और उसकी खुराक में पोषक तत्व सभी उचित अंशों में हों तो उसे दँतुरिया निकलते वक्त कोई तकलीफ़ नहीं होती।

लेकिन साधारणतया देखा जाता है कि मसूड़ों में से दाँतों के निकलते वक्त बच्चे के स्वास्थ्य में गड़बड़ी पैदा हो जाती है। मसूड़ों का लाल हो जाना, सूजना, लार का ज्यादा बहना, ये सब बच्चे की पीड़ा के कारण बनते हैं। उस समय उन्हें प्यास ज्यादा लगती है। दूध पीने का मन नहीं होता। इसलिए उस समय उबाला हुआ पानी और फलों का रस दे सकते हैं। उस समय बच्चों की देख-भाल सावधानी से करनी चाहिए।

धीरे धीरे बच्चों के ये दाँत उखड़ जाते हैं और असली दाँत निकलते हैं। वैद्यों का कहना है कि दाँतों का स्वास्थ्य खुराक पर निर्भर रहता है। केल्शियम, 'डी' विटमिन आदि से युक्त भोजन दाँतों की मजबूती के लिए जरूरी है।

तुम्हारी दीदी

कुमारी उमा

पार्वती बाई

कुमुद

दाँतों के बारे में

नवजात शिशु के मुँह में हमें दाँत नहीं दिखाई देते। हम समझते हैं कि अभी बच्चे के दाँत नहीं निकले। लेकिन वास्तव में बच्चे के ऊपरी दस और निचले दस, कुल बीस दाँत कभी के तैयार होकर मसूड़ों के अन्दर छिपे रहते हैं। कोई निश्चित रूप से नहीं कह सकता कि बच्चे के दाँत कब निकलते हैं? लेकिन उनकी अपनी अपनी शारीरिक व्यवस्था के अनुसार छठे महीने से लेकर डेढ़ साल तक, जल्दी जल्दी या धीरे धीरे बीस दाँत निकल आते हैं। लेकिन उनके निकलने में अगर थोड़ी देर भी हो जाए तो घबराने की कोई बात नहीं। अगर बचा स्वस्थ हो, याने उसकी बढ़ती के लिए आवश्यक विटमिन और लवण आदि उसकी देह में हों और उसकी खुराक में पोषक तत्व सभी उचित अंशों में हों तो उसे दँतुरिया निकलते वक्त कोई तकलीफ़ नहीं होती।

लेकिन साधारणतया देखा जाता है कि मसूड़ों में से दाँतों के निकलते वक्त बच्चे के स्वास्थ्य में गड़बड़ी पैदा हो जाती है। मसूड़ों का लाल हो जाना, सूजना, लार का ज्यादा बहना, ये सब बच्चे की पीड़ा के कारण बनते हैं। उस समय उन्हें प्यास ज्यादा लगती है। दूध पीने का मन नहीं होता। इसलिए उस समय उबाला हुआ पानी और फलों का रस दे सकते हैं। उस समय बच्चों की देख-भाल सावधानी से करनी चाहिए।

धीरे धीरे बच्चों के ये दाँत उखड़ जाते हैं और असली दाँत निकलते हैं। वैद्यों का कहना है कि दाँतों का स्वास्थ्य खुराक पर निर्भर रहता है। केल्शियम, 'डी' विटमिन आदि से युक्त भोजन दाँतों की मजबूती के लिए जरूरी है।

तुम्हारी दीदी

उसका रंग भी हथेली के रंग से मिलने वाला होगा। तमाशा करते समय तुम दर्शकों से ली हुई ताश की नौ पत्तियों में से पहली पत्ती उस धागे और हथेली के बीच घुसा दोगे। पहला चित्र देखो तो यह तुम्हारी समझ में आ जाएगा। बाकी आठों पत्तियाँ तुम इस पत्ती के नीचे घुसा दोगे। नीचे का का चित्र देखो। पत्तियों को इस तरह सजाने से पहली पत्ती बाकी पत्तियों को नीचे गिरने

से रोकेगी। क्योंकि बाकी पत्तियाँ उसके नीचे दबी रहेंगी। इस तमाशे का रहस्य यही है।

[जो प्रोफेसर साहब से पत्र-व्यवहार करना चाहें वे उनको 'चन्दामामा' का उल्लेख करते हुए अंग्रेज़ी में लिखें।

प्रोफेसर पी. सी. सरकार, मेजीशियन
पो. बा. 7878 कलकत्ता 12]

धरती के लाल

['अशोक' बी. ए.]

हम धरती के लाल।
इसकी प्रेममयी गोदी में
घुटनों के बल खड़े हुए हम।
इसकी रज में लोट-पोट कर
छोटे से फिर बड़े हुए हम।
यह है मात-यशोदा अपनी
हम हैं प्रिय गोपाल।
हम धरती के लाल।

हरे सुनहरे आँचल वाली
यह धरती है भारत-माता।
इसके मस्तक पर हिम-गिरि का
कितना सुन्दर मुकुट सुहाता।
और गले में गङ्गा-यमुना
की जगमग जयमाल।
हम धरती के लाल।

यही एक ऐसी धरती है
जहाँ राम ने जन्म लिया था।
यहीं जन्म ले गाँधीजी ने
इसे पुनः स्वाधीन किया था।
हम सब इसका मान बढ़ाएँ
सेवा का व्रत - पाल।
हम धरती के लाल।

हम नौनिहाल भारत माँ के
हम न्यारे और निराले हैं!
हम शूर-वीर, गम्भीर धीर
अपनी धुन के मतवाले हैं।
मातृ-भूमि हित लड़ें समर में
बैरी हो या काल।
हम धरती के लाल।

१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, तक के अंक सिलसिले से लिख लो। इनमें से दो, तीन, चार या पाँच जितने भी अंक चाहो उसी क्रम में लिख लो। याने १, २, ३, ले सकते हो; २, ३, ४, ५, ले सकते हो या ४, ५, ६, ७, ८, ९, ले सकते हो। लेकिन १, ३, ५, या ३, ७, ९, इस तरह बेसिलसिले नहीं ले सकते। याने तुम जिस अंक से शुरू करोगे उसके बाद के अंक जितने चाहो उसी सिलसिले में लो। इस तरह तुम जितने अंक चाहो, अलग एक कागज पर लिख लो। फिर उन्हें ९ से गुणा करो। जो गुणन-फल होगा मुझसे कह दो। मैं तुरन्त बता दूँगा कि तुमने कौन से अंक लिए थे।

जैसे समझ लो कि तुमने २, ३, ४, ५, ६, ७, तक के अंक लिए। इनको ९ से गुणा करने से (२३४५६७ × ९) २११११०३ होगा। तुम मुझे ज्यों ही यह संख्या बता दोगे मैं जान जाऊँगा कि तुमने २, ३, ४, ५, ६, ७, तक के अंक लिए। इसका रहस्य यह है। जवाब में जो पहला अंक होगा वही तुम्हारे लिए हुए अंकों में भी पहला होगा। जवाब का जो आखिरी अंक होगा उसे १० में से निकाल देने से जो बच रहेगा वह तुम्हारे लिए हुए अंकों में सबसे आखिरी होगा। उदाहरण देखो—ऊपर का जो जवाब था उसका पहला अंक २ था। इससे मालूम होता है कि तुम्हारे लिए हुए अंकों में भी पहला २ था। जवाब का आखिरी अंक ३ था। इसे दस में से निकाल देने से ७ बच रहेगा। इससे मालूम होता है कि तुम्हारे लिए हुए अंकों में से आखिरी अंक ७ था। इसी तरह तुम कोई भी अंक बता सकते हो।

संकेत

बाएँ से दाएँ :

1. भीम का अस्त्र
3. गिनती
4. चाल
6. लम्बा-चौड़ा
8. असंभव

* * *

ऊपर से नीचे :

1. गणेश जी
2. कण
4. किला
5. हर्ष से रोमांचित
6. छुटकारा पाया हुआ
7. साँझ
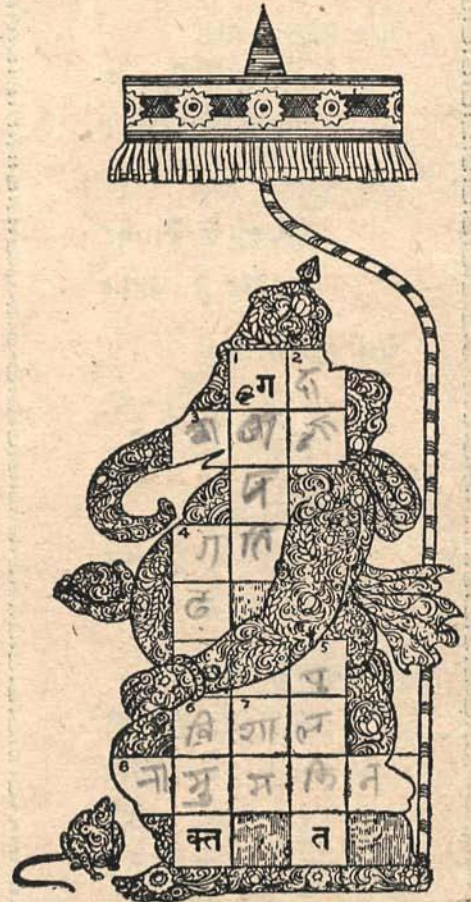
मैं कौन हूँ ?

★

मैं भगवान का एक अवतार हूँ। मेरे नाम में पाँच अक्षर हैं। मुझे आप सब जानते हैं।

मेरा पहला अक्षर
श्रीमान में है, पर
मिस्टर में नहीं।

मेरा दूसरा अक्षर
महाराज में है, पर
बादशाह में नहीं।

मेरा तीसरा अक्षर
मरण में है, पर
निधन में नहीं।

मेरा चौथा अक्षर
चंपक में है, पर
पाटल में नहीं।

मेरा पाँचवाँ अक्षर
सुरेंद्र में है, पर
महेश में नहीं।

क्या तुम बता सकते हो कि मैं कौन हूँ ?

अगर न बता सको तो जवाब ५६-वें पृष्ठ में देखो।

विनोद-वर्ग

ऊपर के वर्ग को अगर तुम सही सही पूरा करोगे तो पहले अक्षरों को ऊपर से नीचे की ओर पढ़ने पर सौराष्ट्र के एक शहर का (जो कपड़े की मिलों के लिए मशहूर है) और आखिरी अक्षरों को पढ़ने से भारत के प्रमुख नेता का नाम निकल आएगा। संकेतों के लिए नीचे देखो।

१. धान्य
२. एक मिठाई
३. ईसा की उपाधि
४. मेंढक
५. पगला
६. दबने वाला

अगर पूरा न कर सको तो जवाब ५६-वें पृष्ठ में देखो।

		1	2	3	4	5		
6	7	8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30	31	32
		33	34	35	36	37		

बच्चो ! क्या तुम जानते हो कि चाँद के बहुत से नाम हैं ? निम्नलिखित संकेतों की सहायता से अगर तुम ऊपर के वर्ग को पूरा करके सिलसिले से पढ़ोगे तो तुम्हें चाँद के दस नाम मालूम हो जाएँगे। इस वर्ग को यों पूरा करना होगा—जैसे संकेतों में पहला है—'एक फूल जिसके पास भौंरा नहीं फटकता।' इससे तुम जान जाओगे कि वह फूल 'चंपा' है। तब तुम 'चंपा' का पहला अक्षर ६ ठे वर्ग में और दूसरा २३ वें वर्ग में लिख लोगे। इसी तरह बाकी वर्गों को भी संकेतों की संख्याओं के आधार पर पूरा करो।

६, २३ – एक फूल जिसके पास भौंरा नहीं फटकता।

७, ९, ३ – जमाई

२, १, १८ – आइना

४, २९ – राह

३४, ११, १४, २५ – भौंरा

१५, १०, १६ – सहूलियत

२०, १२ – बाल

२२, ८ – माफ़ी

३०, ३१ – जाड़ा

३७, ३५, १७, २८ – बुरी राह चलना

२७, ३३ – झगड़ा

३६, २४ – आला

२६, १९ – नक्षत्र

२१, ३२ – संवत

१३, ५ – निश्चल मौन

अगर न पूरा कर सको तो उत्तर के लिए ५६ वाँ पृष्ठ देखो।
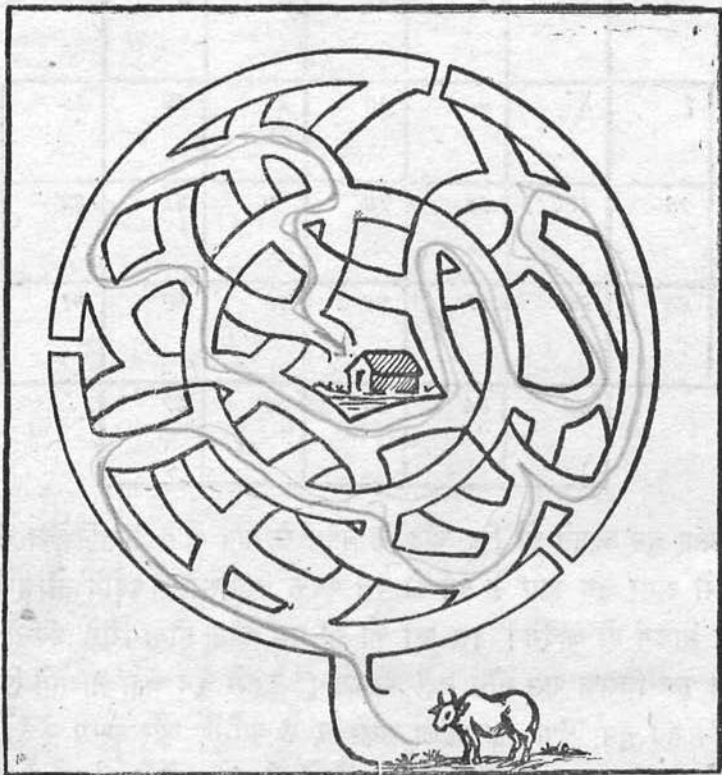
यह गाय घर से चल कर बहुत दूर आ निकली है। और घर का रास्ता भूल गई है। अगर आप रास्ता जानते हों तो गाय को उसके घर तक छोड़ आइये।

---

४५ वें पृष्ठ की ६ चित्रों वाली पहेली का जवाब:
२ और ३ नंबर वाले दोनों चित्र अलग हैं।

इस तस्वीर को रंग कर अपने पास रख लेना और अगले महीने के चन्दामामा के पिछले कवर पर के चित्र से उसका मिलान करके देख लेना ।

चन्दामामा पहेली का जवाब :
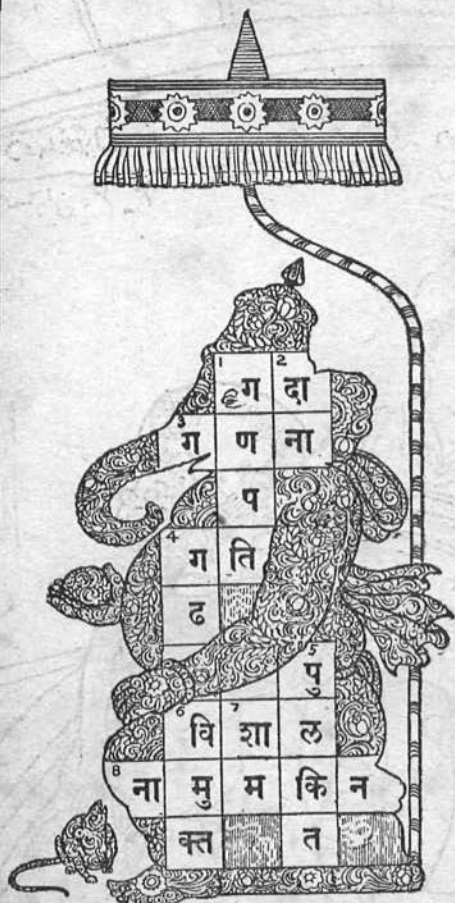
विनोद-वर्ग का जवाब :

१ अनाज,	४ दादुर,
२ हलवा,	५ बावला,
३ मसीह,	६ दबैल

'मैं कौन हूँ' का जवाब :

श्रीरामचन्द्र

५३ पृष्ठ की पहेली का जवाब :

संकेतों के अनुसार आने वाले शब्द :

६, २३ - चंपा
७, ९, ३ – दामाद
२, १, १८ – मुकुर
४, २९ – पथ
३४, ११, १४, २५ – मधुकर
१५, १०, १६ – सुविधा
२०, १२ – केश
२२, ८ – क्षमा
३०, ३१ – शीत
३७, ३५, १७, २८ – बहकना
२७, ३३ – रार
३६, २४ – ताक
२६, १९ – तारा
२१, ३२ – शक
१३, ५ – शांति

वर्ग को इन शब्दों से पूरा करके १ से लेकर ३७ तक क्रम से पढ़ने पर चन्दमामा के नाम इस तरह आएँगे : कुमुदपति, चन्दामामा, विधु, शशांक, सुधाकर, राकेश, क्षपाकर, तारानाथ, शीतकर, महताब

Controlling Editor : SRI CHAKRAPANI
Printed and Published by B. NAGI REDDI at the B. N. K. Press, Madras.

Chandamama, October '50 Photo by A. K. Syed

दीदी से गपशप

CHANDAMAMA (Hindi) OCT. 1950 Regd. No. M. 5452

कमल और मुख-कमल